हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय 4

याजक

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
पुराने नियम की पृष्ठभूमि 2
योग्यताएँ..**2**
परमेश्वर के द्वारा नियुक्त 2
परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य 3
कार्यप्रणाली **4**
अगुवाई...4
धार्मिक क्रियाएँ 6
मध्यस्थता 9
अपेक्षाएँ...**10**
ऐतिहासिक विकास 10
विशेष भविष्यद्वाणियाँ...15
यीशु में पूर्णता...17
योग्यताएँ..**17**
परमेश्वर के द्वारा नियुक्त 17
परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य 19
कार्य **20**
अगुआई 20
धार्मिक रीतियाँ... 21
मध्यस्थता 24
अपेक्षाएँ..**25**
महान महायाजक.. 25
राजा के रूप में याजक 26
याजकों का समाज.. 27
आधुनिक उपयोग.. 28
बलिदान...**29**
भरोसा.. 29
सेवा.. 31
आराधना 32
मेल-मिलाप...**33**
मेल 33

  - एकता 35
  - मिशन.. 36
- **मध्यस्थता..36**
  - विनती करना.. 37
  - समर्थन करना.. 37

उपसंहार.. 41

हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय चार

याजक

परिचय

हमसे से अधिकाँश मुश्किल से ही इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि उन्हें किसी बहुत ही प्रसिद्ध और शक्तिशाली व्यक्ति से भेंट करने के लिए बुलाया जाए। परंतु हम सब जानते हैं कि हमारी प्रतिक्रिया कैसी होगी। हम शायद अपने से कहेंगे, “क्या कोई मेरा उससे परिचय कराएगा? मुझे क्या पहनना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए? मुझे क्या कहना चाहिए? जब मैं वहाँ होऊँगा तो कौन मुझे दिखाएगा कि मुझे कैसे व्यवहार करना चाहिए?”

कल्पना कीजिए कि आपको परमेश्वर के महिमामय सिंहासन कक्ष में निमंत्रित किया गया है। उसने जिसने सब वस्तुओं को सृजा है। आप शायद वैसी ही प्रतिक्रिया देंगे, बल्कि उससे भी बड़ी। “क्या कोई ऐसा यहाँ है, जो परमेश्वर से मेरा परिचय कराए? मुझे क्या करना चाहिए? मुझे क्या कहना चाहिए? कौन बताएगा कि मुझे परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे व्यवहार करना चाहिए?”

ख़ुशी की बात यह है कि एक व्यक्ति है जो परमेश्वर से भेंट कराने के लिए हमें तैयार कर सकता है, जो उसके साथ हमारा परिचय करा सकता है, और परमेश्वर को प्रेरित कर सकता है कि वह हम पर कृपादृष्टि करे ताकि हमें उसके दंड से डरने की आवश्यकता न हो। और निःसंदेह वह व्यक्ति यीशु मसीह है, और वह हमारा महान महायाजक है।

यह हम यीशु में विश्वास करते हैं की हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक “याजक” दिया है। इस अध्याय में, हम उन तरीकों की खोज करेंगे जिनमें यीशु बाइबल में याजक के बाइबल-आधारित कार्यभार को पूरा करता है, जिसमें वह परमेश्वर और उसके लोगों के बीच की वाचा में मध्यस्थ का कार्य करता है।

जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, पुराने नियम में परमेश्वर ने तीन कार्यभारों की स्थापना की जिनके द्वारा उसने अपने राज्य को संचालित किया : भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के कार्यभार। और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में, जिसे हम सामान्यतः नए नियम का युग कहते हैं, ये तीनों कार्यभार यीशु में अपनी परम पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

इसी कारण, पूरे इतिहास के दौरान इन कार्यभारों के महत्व और कार्यप्रणाली का अध्ययन हमें यीशु द्वारा परमेश्वर के राज्य के वर्तमान संचालन, इसके साथ-साथ उसके विश्वासयोग्य अनुयायियों की आशीषों और दायित्वों को समझने में हमारी सहायता कर सकता है। इस अध्याय में हम यीशु के याजक के कार्यभार पर ध्यान केंद्रित करेंगे। हम एक याजक की परिभाषा इस प्रकार देंगे :

> एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है ताकि परमेश्वर उन्हें अपनी आशीषें देने के लिए अपनी विशेष पवित्र उपस्थिति में स्वीकार करे।

हम सब जानते हैं कि परमेश्वर अदृश्य रूप में हर समय हर स्थान पर उपस्थित रहता है। परंतु कुछ निश्चित समयों और स्थानों पर वह स्वयं को विशेष रूप से दृश्य तरीके से प्रकट करता है। उदाहरण के लिए, वह अपने स्वर्गीय सिंहासन कक्ष की भव्य महिमा में ऐसा करता है। और कई बार वह पृथ्वी पर भी ऐसा करता है। और जब कभी भी रचित प्राणी उसके इस तरह के प्रकटीकरण के पास आते हैं, तो हमें उचित रीति से तैयारी, प्रतिनिधित्व एवं अगुवाई प्राप्त होनी चाहिए, ताकि हम परमेश्वर की प्रमाणिकता और आशीषों को प्राप्त कर सकें। बाइबल में इस प्रकार की तैयारी, प्रतिनिधित्व और अगुवाई का कार्य याजकों का होता था।

यीशु के भविष्यद्वक्ता होने के कार्यभार के हमारे अध्याय के समान ही, यीशु के याजक के कार्यभार पर आधारित यह अध्याय तीन मुख्य विषयों को अपने में समाहित करेगा। पहला, हम याजकीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि की जाँच करेंगे। दूसरा, हम यीशु के व्यक्तित्व और कार्य में इस कार्यभार की पूर्णता की खोज करेंगे। और तीसरा, हम यीशु के याजकीय कार्य के आधुनिक उपयोग पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले हम यीशु के याजकीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्टभूमि को देखें।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि

अधिकाँश मसीही जब पुराने नियम में याजकपन के बारे में सोचते हैं, तो उनका ध्यान एकदम से हारून और उसके वंशों की ओर चला जाता है, जिन्हें मूसा के दिनों के दौरान याजकों के कार्य के लिए अभिषिक्त किया गया था, जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था 8-9 में पढ़ते हैं।

परंतु यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि मूसा के दिनों से पहले भी ऐसे याजक हुआ करते थे जो परमेश्वर की सेवा करते थे। एक बहुत ही विस्तृत भाव में देखें तो पाप में पतन से पहले ही परमेश्वर ने मनुष्यजाति के पिता आदम को उसका याजक होने के लिए अभिषिक्त किया था। और आदम के बाद संपूर्ण मनुष्यजाति को इस सामान्य भाव में मूल रूप से परमेश्वर के याजक बनने के लिए बुलाया गया था।

और अधिक तकनीकी भाव में हम अब्राहम के दिनों में मलिकिसिदक जैसे लोगों को पाते हैं, जिसका उल्लेख उत्पत्ति 14 में किया गया है। वह शालेम का राजा और याजक दोनों था। अय्यूब 1 संकेत करता है कि स्वयं अय्यूब ने अपने परिवार के लिए एक याजक के रूप में कार्य किया। और निर्गमन 3 के अनुसार मूसा का ससुर यित्रो भी मिद्यान में परमेश्वर का याजक था।

अंततः, परमेश्वर ने आधिकारिक और विशिष्ट याजकपन को स्थापित किया जिसमें हारून और उसके वंशों ने याजकपन के अन्य सभी प्रारूपों को बदल दिया। परंतु विभिन्न प्रकार के ये सब लोग प्रभु के सच्चे याजक थे। और इनमें से प्रत्येक यीशु के याजकपन की पुराने नियम की पृष्ठभूमि का भाग है।

हम याजकीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि की खोज तीन तरीकों से करेंगे। पहला, हम याजकों की योग्यताओं की ओर देखेंगे। दूसरा, हम उनकी कार्यप्रणाली पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम उन अपेक्षाओं की खोज करेंगे जिनकी रचना पुराने नियम ने भविष्य की याजकीय सेवकाई के लिए कर दी थी। आइए सबसे पहले उन योग्यताओं की ओर देखें जिन्हें पुराने नियम में याजकों को रखनी होती थीं।

योग्यताएँ

प्राचीन याजकों के पास विभिन्न तरह की योग्यताएँ होनी आवश्यक होती थीं, परंतु हम केवल दो का ही उल्लेख करेंगे जिन पर पवित्रशास्त्र बल देता है। पहली, हम देखेंगे कि याजक परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए जाते थे। और दूसरी, हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के उनके दायित्व को दर्शाएँगे। आइए इस बात से आरंभ करें कि याजकों को उनके कार्यभार के अनुसार सेवा करने के लिए परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया जाता था।

परमेश्वर के द्वारा नियुक्त

पुराने नियम में केवल परमेश्वर ही याजकों को नियुक्त कर सकता था। याजक कभी भी अपने आप से नियुक्त नहीं हुआ करते थे। उन्हें उस कार्यभार के लिए मत डालकर चुना नहीं जा सकता था। उन्हें राजाओं या अन्य शासकों के द्वारा भी नियुक्त नहीं किया जा सकता था। और यहाँ तक कि स्वयं याजक

भी अपनी श्रेणियों में सेवा करने के लिए और लोगों का चुनाव नहीं कर सकते थे। सुनिए निर्गमन 28:1 क्या कहता है, जहाँ परमेश्वर ने मूसा को यह आज्ञा दी :

> तू . . . अपने भाई हारून . . . और उसके पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे लिए याजक का काम करें। (निर्गमन 28:1)

विस्तृत निर्देश जो आगे निर्गमन 28 में पाए जाते हैं, यह दिखाते हैं कि परमेश्वर द्वारा नियुक्ति महायाजक के रूप में हारून के अभिषेक का महत्वपूर्ण भाग थी। और गिनती 18:22-23 तो यहाँ तक कहता है कि यदि किसी अन्य गोत्र का कोई इस्राएली याजक का कार्य करने का प्रयास करता है, तो वह व्यक्ति मार डाला जाए। इब्रानियों 5:1, 4 इन वचनों के साथ इसकी पुष्टि करता है :

> हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है, और मनुष्यों ही के लिये उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से संबंध रखती हैं, ठहराया जाता है . . . यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून की नाई परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। (इब्रानियों 5:1, 4)

यही सिद्धांत न केवल महायाजक पर लागू होता है, बल्कि पुराने नियम के सभी याजकों पर भी।

परमेश्वर के द्वारा नियुक्त होने के साथ-साथ याजकों को अपने कार्यभार के लिए योग्य बनने हेतु परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना भी आवश्यक था।

परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य

क्योंकि याजक अक्सर मिलाप वाले तंबू और मंदिर में परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में सेवा किया करते थे, इसलिए उन्हें केवल उसी की आराधना करने और सावधानी के साथ अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति विशेष विश्वासयोग्यता को दर्शाना होता था। उन्हें इन कार्यों को यह सुनिश्चित करने के लिए भी करना होता था कि परमेश्वर के लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें, ताकि उन्हें उसकी पवित्र उपस्थिति में स्वीकार किया जाए।

> हम पुराने नियम के याजकों से यह जान पाते हैं कि वहाँ ऐसे विशेष नियम थे जिनका उन्हें पालन करना होता था, और एक विशेष तरीका था, जिसमें उन्हें बलिदान के लिए आग को चढ़ाना था, और एक ऐसा तरीका भी था, जिसमें उन्हें उन पशुओं की जाँच करनी होती थी जिन्हें बलिदान के लिए लाया जाता था, ताकि वे आश्वस्त हो सकें कि वे जानवर शुद्ध थे, कि वे वास्तव में निर्दोष थे। परमेश्वर इसकी माँग करता था। और याजक की विशेष पोशाक होती थी, जिसे उसे पहनना होता था, और स्नान की कुछ विधियाँ थीं जिनमें से होकर उसे जाना होता था, और इब्रानियों की पुस्तक बल देती है कि इन सब बातों का विवरण, जिसमें मिलाप का तंबू और मिलाप के तंबू की सारी वस्तुएँ सम्मिलित हैं, इसलिए दिया गया था क्योंकि वे उसे प्रस्तुत करती थीं जिसे उसने "स्वर्गीय तंबू" कहा था - जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति थी। इसलिए, याजक प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं। याजक ऐसी पवित्रता और ऐसी संतुष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं जो केवल परमेश्वर को दी जानी चाहिए यदि हमें क्षमा प्राप्त करनी है। और इसलिए याजकीय प्रबंधों में, याजकीय कानूनों में जो कुछ है, वह हमें उस सिद्धता को दर्शाता है कि मसीह कौन है, और यह भी कि वह वास्तव में अपने लोगों के पापों को उठाएगा। जिस पोशाक को उन्होंने पहना और उनके ऊपर लिखे हुए गोत्रों के नाम, और बलिदानों की सिद्धता, यह सब कुछ हमें यह दर्शाने के लिए है कि

> परमेश्वर इन सब बातों को कितनी गंभीरता से लेता है, वह कितना पवित्र है, और जब आप उसके अंत में आते हैं तो वहाँ पर केवल एक ही मार्ग रह जाता है जिसके द्वारा उद्धार आ सकता है। यदि इस एक मार्ग के विषय में कोई समझौता कर लेता है, तो हमारा खेल ख़त्म, फिर कोई संतुष्टि नहीं हो सकती। अतः हमारे मनों में परमेश्वर की पवित्रता की गंभीरता और धार्मिकता और मसीह के बलिदान की विशिष्टता को स्थापित करने के लिए याजकीय नियम बहुत महत्वपूर्ण हैं।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

याजकों के लिए पवित्र होने की आवश्यकता का एक सबसे नाटकीय उदाहरण लैव्यव्यवस्था 10:1-2 में पाया जाता है। वहाँ पर परमेश्वर ने नादाब और अबीहू याजकों को उनके अपवित्र बलिदान के कारण मार डाला था। और 1 शूमएल 4 में प्रभु के प्रति उनके असम्मान के कारण याजक होप्नी और पिन्हास मर जाते हैं।

इन उदाहरणों के अतिरिक्त भजन संहिता 132:39 9 और विलापगीत 4:11-13 जैसे वचन स्पष्ट करते हैं कि स्वयं याजकों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना था यदि उन्हें यह आशा रखनी थी कि वे परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करने के लिए उसके लोगों को परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में लाने के लिए तैयार करें और उनकी अगुवाई करें। अन्यथा, परमेश्वर की निकटता में आने का परिणाम एक बड़े दंड को प्राप्त करना होगा।

पुराने नियम में याजकों की योग्यताओं को देख लेने के बाद, आइए हम उनकी कार्यप्रणाली को देखें।

कार्यप्रणाली

हम याजकों की कार्यप्रणाली के तीन पहलुओं पर ध्यान देंगे। पहला, हम उस अगुवाई को देखेंगे, जो उन्होंने प्रदान की। दूसरा, हम उन धार्मिक क्रियाओं की खोज करेंगे जिनको उन्होंने संचालित किया। और तीसरा, हम दूसरों के लिए की जाने वाली मध्यस्थता पर ध्यान देंगे। आइए उस अगुवाई से आरंभ करें जो याजकों ने प्रदान की।

अगुवाई

पुराने नियम के याजकों ने परमेश्वर के लोगों की विभिन्न तरीके से अगुवाई प्रदान की। परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम इन्हें तीन शीर्षकों के तहत सारगर्भित करेंगे। पहला, आराधना एक सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था जिसमें याजकों ने अगुवाई प्रदान की।

आराधना परमेश्वर के लोगों को उसकी विशेष पवित्र उपस्थिति में लाने के लिए तैयार करने और अगुवाई देने का एक महत्वपूर्ण भाग थी। इस्राएल में याजक और लेवी राष्ट्रीय आराधना के सारे कार्यक्रमों का संचालन करते थे, जैसे कि इस्राएल के वार्षिक त्यौहार। वे प्रतिदिन मिलाप के तंबू और मंदिर में आराधना को संचालित करते थे, और साथ ही साथ साप्ताहिक सब्त की विशेष सभाओं में भी। और वे इसमें भाग लेने वालों को स्तुति और गीतों में भी अगुवाई प्रदान करते थे। हम इस प्रकार के विवरण को 1 इतिहास 15; 2 इतिहास 7, 8, 29 और 30 में, और नहेम्याह 12 में पाते हैं।

दूसरा, याजकों ने दीवानी और रस्म-संबंधी न्यायिक प्रक्रिया में विशेष अगुवाई प्रदान की थी। उन्होंने यह कार्य प्राथमिक रूप से उन परिस्थितियों पर परमेश्वर की व्यवस्था को लागू करने के द्वारा किया जिनका वे सामना करते थे। इस वास्तविकता का उल्लेख कई स्थानों पर पाया जाता है, जैसे कि निर्गमन 28:29-30, गिनती 21:27, व्यवस्थाविवरण 21:5 और यहेजकेल 44:24।

उदाहरण के लिए, सुनिए किस प्रकार मूसा ने व्यवस्थाविवरण 17:8-9 में याजकों द्वारा दिए गए दीवानी निर्णयों का वर्णन किया :

> यदि तेरी बस्तियों के भीतर कोई झगड़े की बात हो, अर्थात आपस के खून, वा विवाद, वा मारपीट का कोई मुकद्दमा उठे, और उसका न्याय करना तेरे लिये कठिन जान पड़े, तो . . . लेवीय याजकों के पास और उन दिनों के न्यायियों के पास जा कर पूछताछ करना, कि वे तुम को न्याय की बातें बतलाएँ। (व्यवस्थाविवरण 17:8-9)

जैसा कि यह अनुच्छेद संकेत करता है, वैधानिक मामलों को सामान्यतः स्थानीय न्यायालयों में सुलझाया जाता था। परंतु विशेष तौर पर कठिन मुकद्दमों में लोग याजकों या विशेष न्यायियों के पास जा सकते थे, और वे उनका न्याय करते थे। वास्तव में, निर्गमन 18 में मिद्यानी याजक यित्रो ने स्वयं मूसा को बताया कि इस्राएल में न्यायालयों और न्यायियों का का संचालन कैसे करना था। यित्रो के याजकपन ने उसे ऐसे विषयों में अधिकृत बना दिया था।

याजकीय निर्णयों और अगुवाई में स्वास्थ्य और पवित्रता से संबंधित विषयों की छानबीन करना, व्याख्या करना और उनका न्याय करना भी सम्मिलित था। याजक घरों में फफूंदी की उपस्थिति का निरीक्षण करते थे, रोगों का परीक्षण करते थे, और परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार लोगों या वस्तुओं को शुद्ध या अशुद्ध घोषित करते थे। इस तरह के याजकीय कर्त्तव्यों को लैव्यव्यवस्था 11-15 जैसे अनुच्छेदों में दर्शाया गया है।

ये याजकीय विषय थे क्योंकि व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याएँ संसार में आदम के पाप के विरुद्ध परमेश्वर के श्राप के रूप में आईं थीं, जिसके कारण आदम को अदन की वाटिका में पाई जाने वाली परमेश्वर की विशेष उपस्थिति से निकाल दिया गया था। मृत्यु का सार्वभौमिक श्राप उत्पत्ति 3:19 में स्थापित किया गया था। और इस सामान्य न्याय में स्वास्थ्य से संबंधित अन्य न्याय भी सम्मिलित थे, जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था 26:16 और व्यवस्थाविवरण 28:21-28 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। इसी कारण से, परमेश्वर की आशीषों के लिए उस तक पहुँचने हेतु इस्राएलियों को तैयार करने में स्वास्थ्य-संबंधी विषय एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

तीसरा तरीका जिसमें याजकों ने अगुवाई को प्रदर्शित किया, वह लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाना था, जैसा कि हम 2 इतिहास 35:3, नहेम्याह 8 और मलाकी 2 में पढ़ते हैं।

एक उदाहरण के तौर पर मलाकी 2:7 में प्रभु के वचनों को सुनिए :

> क्योंकि याजक को चाहिये कि वह अपने ओठों से ज्ञान की रक्षा करे, और लोग उसके मुँह से व्यवस्था पूछें - क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है। (मलाकी 2:7)

झूठी शिक्षा संसार में पाप का परिणाम थी, और परमेश्वर के वचन के उल्लंघनों ने लोगों को उसकी विशेष उपस्थिति में जाने के अयोग्य कर दिया। इसलिए याजकों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने का कार्य दिया गया था ताकि वे उसके लोगों को उसकी विशेष पवित्र उपस्थिति में इस प्रकार ले जाने के लिए तैयार करें और अगुवाई दें जो उसकी आशीष को लेकर आए।

याजकों द्वारा प्रदान की गई अगुवाई पर ध्यान देने के बाद, आइए अब हम उन धार्मिक क्रियाओं को देखें जिन्हें उन्होंने अपने लोगों के लिए संचालित किया।

धार्मिक क्रियाएँ

> पुराने नियम के विश्वासियों के जीवनों में, विभिन्न तरह के त्यौहारों जैसे सब्त, बलिदान की भेंटों आदि ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सबसे पहले, उन्हें इस्राएल को यह याद दिलाना था कि परमेश्वर के लोगों के रूप में उसका जीवन उनके लिए परमेश्वर का दान था। उदाहरण के लिए, फसह का अर्थ उन्हें यह याद दिलाना था कि वे किसी समय में मिस्र में गुलाम थे, और केवल परमेश्वर ने उन्हें वहाँ से स्वतंत्र किया था। केवल यही याद दिलाने के लिए नहीं कि उन्हें स्वतंत्र किया गया था, क्योंकि उन्हें मिस्र में से इसलिए स्वतंत्र किया गया था कि उन्हें सीनै पर्वत पर ले जाया जाए जहाँ परमेश्वर ने उनके साथ अपनी वाचा को स्थापित किया। अतः इस्राएल का त्यौहारों-संबंधी जीवन उनके लिए यह याद दिलाने के लिए था कि केवल परमेश्वर ने ही उन्हें अपने लोग होने के लिए बुलाया है, कि वे परमेश्वर के उन सामर्थी कार्यों को स्मरण करें जिनके कारण वे बचाए गए थे। सब्त का कार्य उन्हें दो बातों की याद दिलाना था, यह कि संसार यहोवा का है और उन्होंने स्वयं की सृष्टि नहीं की है, एवं यह कि उन्होंने स्वयं को गुलामी से स्वतंत्र नहीं किया। निर्गमन में मूसा कहता है, “सब्त का पालन करो, क्योंकि सब्त के दिन परमेश्वर ने विश्राम किया।” व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में मूसा कहता है कि सब्त का पालन करो क्योंकि न केवल इसलिए की परमेश्वर ने इस दिन विश्राम किया बल्कि यह याद करो कि किसी समय तुम मिस्र में गुलाम थे। अतः ये सारे त्यौहार उन्हें इस बात की याद दिलाने के लिए थे कि परमेश्वर ने उनको छुड़ाने के लिए क्या किया है, और उन्हें यह याद दिलाने के लिए कि उनके प्रति परमेश्वर की अनुग्रहरुपी भलाई के कारण ही वे परमेश्वर के एकमात्र लोग हैं, और उन कार्यों के द्वारा ही उनका जीवन बना है, और उनकी समझ विकसित हुई है, ताकि वे आज्ञाकारिता, भरोसे, प्रेम और सेवा के जीवनों के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ प्रत्युत्तर देना आरंभ करें और देते रहें।
>
> — डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे

मूसा के दिनों में, और बाद में दाऊद के दिनों में याजकों ने विभिन्न प्रकार की धार्मिक क्रियाओं का संचालन किया जिनकी रचना परमेश्वर के लोगों को उसकी विशेष उपस्थिति में ले जाने के लिए तैयार करने हेतु की गई थी। इन धार्मिक क्रियाओं में पवित्र समय, घटनाएँ और वस्तुएँ सम्मिलित थीं, जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था 1-7 और 23; गिनती 18-19; 1 इतिहास 23; और 2 इतिहास 8 जैसे स्थानों में देखते हैं।

अक्सर ये धार्मिक क्रियाएँ पवित्र स्थानों के इर्द-गिर्द होती थीं - अर्थात् ऐसे स्थानों पर जहाँ परमेश्वर की विशेष उपस्थिति प्रकट होती थी और उसके लोग उसकी आराधना करते थे। उदाहरण के लिए, यह याजक का दायित्व था कि वे यह सुनिश्चित करें कि तंबू और मंदिर के क्षेत्र जितना संभव हो सके उतने सुंदर और सिद्ध हों, ताकि यह परमेश्वर के लिए उचित हो कि वह अपनी विशेष दृश्य महिमा के साथ इसमें वास करे। हम इसके बारे में लैव्यव्यवस्था 24:1-9; गिनती 3-4; और 1 इतिहास 24:25-32 जैसे अनुच्छेदों में पढ़ते हैं।

परंतु शायद याजकीय सेवकाई की सबसे प्रचलित धार्मिक विशेषता भेटों या बलिदानों को चढ़ाना थी। भेंटों में धन्यवाद की अभिव्यक्तियों से लेकर उसकी संगति के अनुभव और पाप के लिए बलिदान चढ़ाने तक के कार्य शामिल होते थे। कुछ निर्धारित अंतरालों पर निरंतर चढ़ाए जाते थे, जैसे कि प्रतिदिन के सुबह और शाम के बलिदान, और प्रायश्चित का वार्षिक दिन। अन्य तब चढ़ाए जाते थे जब विशेष

बातों को पूरा किया जाता था, जैसे कि पाप का दोषी पाया जाना। और अन्य भेंटें आराधक की इच्छानुसार चढ़ाई जाती थीं, जैसे कि स्वैच्छिक भेंटें। निर्धारित भेंटों की एक विशाल श्रेणी की सूची लैव्यव्यवस्था 1-7 और 16 में दी गई है।

याजकों की सारी धार्मिक क्रियाओं में से एक जो यीशु की अपनी सेवकाई के दौरान बहुत प्रचलित थी, वह थी भेंटों को चढ़ाना - विशेषकर प्रायश्चित के बलिदान को चढ़ाना। इसलिए हम अपने ध्यान को मुख्यतः उन पर ही लगाएँगे।

आज हम अक्सर बलिदान को किसी मूल्यवान वस्तु के त्यागने के रूप में देखते हैं, ताकि किसी ऐसी वस्तु को प्राप्त किया जाए जो उससे भी ज्यादा मूल्यवान हो। एक भेंट को जो बात बलिदान बना देती है वह यह है कि दे देने या त्याग देने में हम उसे छोड़ देते हैं जो हमारे लिए कीमती है। पुराने नियम में लोग परमेश्वर को वस्तुएँ इसलिए नहीं चढ़ाते थे कि उसे इनकी आवश्यकता थी। भेंटों ने परमेश्वर के लोगों को वह सब देने के लिए प्रेरित किया जिनको वे इसलिए मूल्यवान समझते थे कि इससे वह प्राप्त करें जो उससे भी अधिक मूल्यवान हो - जैसे कि पापों की क्षमा।

भेंटों ने विश्वासियों को परमेश्वर की आराधना करने, अपने समर्पित भाव को व्यक्त करने, और उसकी उपलब्धता के लिए उसके प्रति आभार व्यक्त करने को प्रेरित किया। निःसंदेह भेंटों को सदैव सही उद्देश्यों से व्यक्त विश्वास की अभिव्यक्ति ही होना था। परमेश्वर ने ऐसे बलिदानों को भी अस्वीकार कर दिया था जो खरे हृदय से नहीं चढ़ाए गए थे। भेंटों का प्रभाव सदैव उस व्यक्ति की खराई पर निर्भर करता था जो परमेश्वर के प्रति बलिदान को चढ़ाता था।

प्रायश्चित के बलिदान मूसा के द्वारा व्यापक रस्मों के दिए जाने से पहले से ही याजकीय सेवकाई का एक महत्वपूर्ण भाग थे। उदाहरण के लिए, अय्यूब 1 में अय्यूब ने यह सोचते हुए अपने बच्चों के लिए जानवरों का बलिदान किया कि कहीं उन्होंने एक साथ उत्सव मनाते हुए लापरवाही से कोई पाप न कर दिया हो। वास्तव में, प्रायश्चित के बलिदान उतने ही पुराने हैं जितना कि मनुष्य का पाप में पतन है। जब आदम और हव्वा ने पहले पहल पाप किया, तो परमेश्वर ने प्रायश्चित के बलिदान की स्थापना की जिसके द्वारा उसने पापों को क्षमा किया और लोगों का अपने साथ मेल-मिलाप किया। इस प्रकार की भेंट या बलिदान का वर्णन लैव्यव्यवस्था 4-6 और गिनती 15:25-28 जैसे स्थानों में किया गया है।

प्रायश्चित के बलिदान के पीछे सामान्य विचार बिल्कुल सीधा है : हमारे पापों के कारण सब मनुष्य दंड के भागी हैं। अतः इस प्रकार के उचित दंड से बचने के लिए आराधक बलिदानों को चढ़ाते हैं जो उनके बदले में परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले दंड को अपने ऊपर ले लेते हैं। धर्मविज्ञानी अक्सर इसे “वैकल्पिक प्रायश्चित” कहते हैं, क्योंकि प्रायश्चित की धार्मिक क्रिया में भेंट या बलिदान आराधक का स्थान ले लेता है या उसका विकल्प बन जाता है।

पुराने नियम की सारी घटनाओं में प्रायश्चित के बलिदान प्रतीकात्मक थे। परमेश्वर ने प्रायश्चित के बलिदानों के द्वारा अपने लोगों पर क्षमा को लागू किया, परंतु बलिदान के गुण या मूल्य के आधार पर नहीं। इसकी अपेक्षा पुराने नियम की भेंटें केवल इसलिए प्रभावशाली थीं क्योंकि उन्होंने नए नियम में आगे की ओर यीशु के बलिदान के तत्व और गुण की ओर संकेत किया किया था।

नया नियम स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के लोगों को पुराने नियम की भेंटों या बलिदानों के आधार पर कभी भी स्थाई रूप से उनके पाप से क्षमा प्रदान नहीं की गई थी। पाप-बालियों ने केवल परमेश्वर के न्याय को कुछ समय के लिए टाल दिया था, और बार-बार इसका नवीनीकरण किया जाना आवश्यक था। क्रूस पर मसीह की मृत्यु ही एकमात्र ऐसा बलिदान थी जिसे परमेश्वर ने पूर्ण तौर पर पापों की स्थाई कीमत के रूप में स्वीकार किया था। परमेश्वर ने पुराने नियम की बलिदान प्रणाली को एक साधन के रूप में प्रदान किया जिसके द्वारा उसने मसीह की मृत्यु के गुणों को अनुग्रह के साथ पुराने नियम के विश्वासियों पर लागू किया।

जब विश्वासयोग्य विश्वासियों के बदले या विकल्प के तौर पर प्रायश्चित के बलिदानों को चढ़ाया जाता था, तो उनके कम से कम दो महत्वपूर्ण परिणाम होते थे, और दोनों ही प्रभावशाली होने के लिए मसीह के भविष्य के बलिदान पर निर्भर रहे। पहला परिणाम जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह है प्रायश्चित।

प्रायश्चित आराधक की भेंट के प्रभाव को दर्शाता है। यह आराधकों से पापों के दोष को हटा लेना है। यह उन्हें उस क्रोध से बचाता है जो परमेश्वर उन पर डालेगा यदि वह दोष हटाया नहीं जाता है। प्रायश्चित के द्वारा आराधकों के पाप के दंड को विकल्प के रूप में रखे जानवर पर डाल दिया जाता है, ताकि वे परमेश्वर के दंड से बच जाएँ।

प्रायश्चित का उल्लेख उन स्थानों पर किया गया है जहाँ पाप के "ढके जाने" या "छुपाए जाने" के बारे में कहा गया है। जैसे कि अय्यूब 14:17, और भजन संहिता 32:1, 5। यह उन अनुच्छेदों में भी स्पष्ट है जो पाप या दोष के "हटाए जाने" की बात करते हैं, जैसे कि लैव्यव्यवस्था 10:17, भजन 25:18 और यशायाह 6:7; और हम इसे उन अनुच्छेदों में भी देखते हैं जो किसी विकल्प पर पाप के "स्थानांतरण" के बारे में बोलते हैं, जैसे कि यशायाह 53:6।

क्षतिपूर्ति के बलिदानों या भेंटों का दूसरा परिणाम था परमेश्वर को संतुष्ट करना। परमेश्वर को संतुष्ट करना परमेश्वर पर हुए उस बलिदान या भेंट के प्रभाव को दर्शाता है। परमेश्वर को संतुष्ट करना या संतुष्टि पाप के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय और क्रोध का तृप्त हो जाना है। परमेश्वर को संतुष्ट करना या संतुष्टि दर्शाता है कि परमेश्वर के क्रोध ने अभिव्यक्ति के एक स्थान को पा लिया है और वह तृप्त हो चुका है। इसके कारण परमेश्वर अपने न्याय को अनदेखा किए बिना अपने आराधक के प्रति करुणा और प्रेम को व्यक्त कर सकता है।

परमेश्वर को संतुष्ट करना या संतुष्टि को ऐसे अनुच्छेदों में दर्शाया गया है जो परमेश्वर के क्रोध को तृप्त किए जाने या दूर किए जाने को दिखाते हैं, जैसे गिनती 25:11-13 और व्यवस्थाविवरण 13:16-17।

> पुराने नियम की बलिदान प्रणाली परमेश्वर के विषय में बहुत से सत्यों का एक बड़ा प्रदर्शन है, परंतु विशेषकर उसकी दया का। हम इसके बारे में अक्सर लोगों के विकल्प के रूप में जानवरों को बलि के रूप में प्रदान किए जाने के रूप में सोचते हैं, ताकि परमेश्वर की अप्रसन्नता, उसके आरोप, और उसके क्रोध को शांत किया जा सके। परंतु हमें यह भी याद रखना चाहिए कि इसकी पूरी प्रेरणा उसके प्रेम, उसकी दया के कारण है - जब हम अपने प्रति उसकी दया, अर्थात् उसके तरस के बारे में सोचते हैं - जो उसके अनुग्रह से बंधा हुआ है तब हम वह पाते हैं, जिसके हम योग्य नहीं हैं। लैव्यव्यवस्था 17:11 यहाँ पर बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ बलिदानी प्रणाली को ऐसे नहीं देखा जाना चाहिए जैसे कि इस्राएल इस प्रणाली को बना रहा हो ताकि वह परमेश्वर को अपनी ओर रख सके। नहीं, यह परमेश्वर है जो इस कार्य को आरंभ करता है, अपने प्रेम के कारण, ताकि एक ऐसा माध्यम बन सके जिसके द्वारा वह उन लोगों के मध्य वास करे। वे भी उसकी उपस्थिति में वास कर सकें। वे उसके लोग हों; वह उनका परमेश्वर हो। यह सब कुछ उसकी दया, उसके प्रेम और उसके अनुग्रह का प्रदर्शन है। और यह सब कुछ अंततः यीशु मसीह में उसके प्रबंध की ओर संकेत करता है जो कि इसकी पूर्णता है। उसमें ये बलिदान जो कि प्रतीक थे अब वास्तविक हो गए हैं जिससे हम अब नई वाचा के भाव में परमेश्वर को जानते हैं। अब हमारे पास हमारे महान बलिदान, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह, के माध्यम से उसके प्रति सीधी पहुँच है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

> पुराने नियम की बलिदान प्रणाली ने कई तरीकों से यह संकेत दिया है कि इसने परमेश्वर की दया को दर्शाया है, परंतु इसका एक उत्कृष्ट तरीका बलिदान के दिन दिखाई देता था, जब आपके पास मिलाप का तंबू या मंदिर था, और उसका सबसे भीतर का भाग अतिपवित्र कहलाता था, और वहाँ पर आपके पास वाचा के संदूक के साथ दस आज्ञाएँ थीं, और उस संदूक के सबसे ऊपर के भाग को दया का सिंहासन कहा जाता था। प्रायश्चित के बलिदान के दिन, महायाजक मेम्ने का लहू लेकर जाता था और मेम्ने को मिलाप वाले तंबू या मंदिर के बाहर बनी वेदी पर चढ़ाता था, फिर परदे को पार करता हुआ अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करता था और संदूक के ऊपर के भाग पर लहू को छिड़क देता था। और विचार यह था कि परमेश्वर दयावान होगा जब मेम्ने का लहू तोड़ी गई व्यवस्था को ढक लेगा। निःसंदेह इसका संकेत इस बात की ओर था कि यीशु मसीह जो सच्चा मेम्ना है, उसका लहू हमारे द्वारा तोड़ी गई व्यवस्था को ढक लेगा। परंतु ध्यान दीजिए, परमेश्वर की दया उस लहू के ऊपर स्थापित है जो हमारे द्वारा तोड़ी गई व्यवस्था को ढक देता है।
>
> — डॉ. फ्रेंक बार्कर

याजकीय अगुवाई और धार्मिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए हम अब मध्यस्थता के कार्य की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जो उन्होंने उन लोगों के बदले की जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे।

मध्यस्थता

हम मध्यस्थता को बिचवई के रूप में परिभाषित कर सकते हैं; या फिर किसी दूसरे के बदले दया की याचना के रूप में। मध्यस्थ वह होता है जो आपका पक्ष लेता है और आपके मुकद्दमे के लिये याचना करता है जब आप मुश्किल में होते हैं, या ऐसा व्यक्ति जो आपके और दूसरे पक्ष के बीच के झगड़ों को सुलझाने का प्रयास करता है।

पुराने नियम के याजक अपने नेतृत्व और अगुवाई के द्वारा, और साथ ही ऐसी धार्मिक क्रियाओं के द्वारा मध्यस्थता करते थे, जो परमेश्वर ने उन्हें उनके लिए निर्धारित किए थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने लोगों के बीच मध्यस्थता की जब उन्होंने उनके संवैधानिक विषयों का निपटारा किया, और लोगों और परमेश्वर के बीच भी मध्यस्थता की जब उन्होंने पापों की क्षमा के लिए भेंटों को चढ़ाया। परंतु याजकों ने अलग-अलग प्रकार की मध्यस्थता का कार्य भी किया।

मध्यस्थता का एक सामान्य प्रकार सहायता के लिए याचना करना था। याजक अक्सर प्रार्थना किया करते थे कि परमेश्वर चंगा करे, बचाए या फिर अपने लोगों की सहायता करे। हम इसका उदाहरण 1 शमूएल 1:17 और 1 इतिहास 16:4 में पाते हैं। एक उदाहरण के तौर पर, अय्यूब 1:5 में अय्यूब द्वारा अपनी संतान के लिए की गई मध्यस्थता के वर्णन को सुनिए :

> जब जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें (अपने पुत्रों और पुत्रियों को) बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अय्यूब सोचता था, “कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।” (अय्यूब 1:5)

अपने घराने के ऊपर याजक होने के नाते, अय्यूब ने अपनी संतान के लिए मध्यस्थता की ताकि वे अपने पाप के परिणामों से सुरक्षित रहें।

मध्यस्थता का एक ओर सामान्य कार्य आशीष की घोषणा करना था। जब याजकों ने लोगों को आशीषित किया तो उन्होंने परमेश्वर से लोगों पर कृपा करने की प्रार्थना की। हम इसे उत्पत्ति 14:19-20 में मलिकिसिदक के द्वारा अब्राहम को आशीष दिए जाने में, और उस आशीष में देखते हैं जो गिनती 6:22-27 में याजकों को सिखाई गई थी कि वे उसकी घोषणा लोगों पर करें। उदाहरण के लिए, 2 इतिहास 30:27 के इस विवरण को सुनिए :

> लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुँची। (2 इतिहास 30:27)

जब वचन कहता है कि उनकी सुनी गई, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने उन लोगों का पक्ष लेकर जिनको उन्होंने आशीषित किया था, याजकीय मध्यस्थता को सम्मान दिया। याजकीय सेवकाई का यह पहलू हमारे समय में अक्सर आराधना के अंत में सेवकों के द्वारा दिए जाने वाले आशीष वचनों में दिखाई देता है। बहुत सी कलीसियाएँ उसी आशीष को दुहराती हैं जो सबसे पहले हारून को गिनती 6 में दी गई थी।

जैसे कि हम देख चुके हैं, याजकों के कार्य कई प्रकार के थे। उन्होंने अगुवाई प्रदान की, धार्मिक कार्यों को संचालित किया, और मध्यस्थता प्रदान की। परंतु ये कार्य जितने भिन्न थे, उतने ही वे एक अटल उद्देश्य के साथ एकता में थे। उनकी रचना इस प्रकार से की गई थी कि वे परमेश्वर के लोगों को उसकी विशेष उपस्थिति में रहने के लिए उपयुक्त बना दें, ताकि वे उसकी वाचा की सारी आशीषों को प्राप्त कर सकें।

अब जबकि हमने याजकों की योग्यताओं और कार्यप्रणाली को देख लिया है, इसलिए आइए हम अपने ध्यान को उन अपेक्षाओं की ओर लगाएँ जिनकी रचना पुराने नियम ने भावी याजकीय सेवाओं के लिए की थीं।

अपेक्षाएँ

पुराने नियम के दिनों में, याजक का कार्यभार कार्यशील और बदलते रहने वाला था। इसके विशेष कर्त्तव्य और दायित्व समय-समय पर बदलते रहते थे। मलिकिसिदक का याजकीय कार्य अय्यूब के जैसा नहीं था। अय्यूब का यित्रो से भिन्न था। और यित्रो का हारून और उसके वंशों से भिन्न था। और पुराने नियम ने इसके आगामी परिवर्तनों के बारे में भी संकेत किया जो कि भविष्य में होंगे।

उन अपेक्षाओं को समझने के लिए जिनकी रचना पुराने नियम के याजकीय कार्य ने भविष्य के लिए की थीं, हम दो दिशाओं की ओर देखेंगे। पहला, हम संपूर्ण पुराने नियम के दौरान में इस कार्यभार के ऐतिहासिक विकास की जाँच करेंगे। और दूसरा, हम याजकीय कार्यभार के भविष्य के बारे में की गई कुछ विशेष भविष्यद्वाणियों की ओर ध्यान देंगें। आइए हम याजक के कार्यभार के ऐतिहासिक विकास के साथ आरंभ करें।

ऐतिहासिक विकास

क्योंकि मनुष्यों को परमेश्वर की विशेष, पवित्र उपस्थिति तक पहुँचने की हमेशा आवश्यकता रही है, इसलिए याजकीय गतिविधियों की भी सदैव आवश्यकता रही है। वास्तव में, याजक मनुष्यजाति और सृष्टि के लिए परमेश्वर की दीर्घकालिक रणनीति हेतु महत्वपूर्ण रहे हैं। परंतु ऐतिहासिक तौर पर, याजकों की भूमिका कई बार परमेश्वर के लोगों की बदलती परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में बदलती रही हैं।

हम इतिहास के चार विभिन्न चरणों के दौरान याजकों की बदलती भूमिकाओं पर ध्यान देंगे, हम सृष्टि के समय से आरंभ करेंगे।

सृष्टि। यह वह समय है जो परमेश्वर की आदम के साथ बाँधी गई वाचा के समानांतर है। अदन की वाटिका, जिसमें मनुष्यजाति को रखा गया था, स्वयं में एक पवित्रस्थान था जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ चला-फिरा करता था और उनसे बातचीत किया करता था। इस संदर्भ में, आदम और हव्वा ने परमेश्वर की सेवा इन रूपों में की जो मिलाप वाले तंबू और मंदिर में हारून की सेवकाई से मिलती जुलती थी। इसी कारण, हम कह सकते हैं कि याजक का कार्यभार उतना ही पुराना है जितनी कि स्वयं मनुष्यजाति। सुनिए उत्पत्ति 2:15 में मूसा ने क्या लिखा है :

> यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे। (उत्पत्ति 2:15)

इस अनुच्छेद में मूसा ने आदम और हव्वा को वाटिका में दिए गए कार्य का वर्णन इब्रानी शब्दों "अवद" अर्थात् "काम," और "शामार" अर्थात् "रक्षा करने" के साथ किया है। गिनती 3:7-8 में मूसा ने शब्दों के इसी संयोजन का प्रयोग मिलाप वाले तंबू में लेवियों के कार्य का वर्णन करने में किया है। और हम अन्य मौखिक समानांतरों को उत्पत्ति 3:8 और 2 शमूएल 7:6 जैसे स्थानों में देखते हैं।

अदन की वाटिका में मनुष्यजाति के कार्य का और मिलाप वाले तंबू में याजकों के कार्य का वर्णन करने के लिए समान भाषा का प्रयोग करने के द्वारा मूसा ने यह संकेत दिया कि आदम और हव्वा मूल याजक थे, और मिलाप वाले तंबू और मंदिर जैसे स्थानों का उद्देश्य उसी कार्य को पूरा करना था जो अदन की वाटिका ने किया था। वास्तव में, बहुत से विद्वानों ने यह सुझाव दिया है कि मिलाप वाले तंबू और मंदिर के सामान और साज-सजावट की रचना विशेष तौर पर अदन की वाटिका को याद करने के लिए की गई थी।

जैसा भी हो, अदन में मनुष्यजाति के याजकपन में परमेश्वर के वाटिकारुपी पवित्र स्थान में उसकी सेवा करना, उसकी पवित्र वस्तुओं की देखभाल करना, और यह सुनिश्चित करना था कि वह स्थान उसके रहने के लिए उपयुक्त हो। इससे बढ़कर, परमेश्वर ने आदम, हव्वा और उनकी संतान को यह आज्ञा दी कि वे अपने कार्य को शेष संसार में भी फैलाते हुए याजकों का समाज बन जाएँ।

उत्पत्ति 1:28 में मनुष्यजाति से कहे परमेश्वर के वचनों को सुनिए :

> फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। (उत्पत्ति 1:28)

पृथ्वी को भरने और उसको अपने वश में कर लेने की परमेश्वर की आज्ञा को अक्सर "सांस्कृतिक आदेश" कहा जाता है, क्योंकि यह मनुष्यजाति पर यह दायित्व प्रदान करता है की वह भूमि को जोते और इस पूरे संसार को विकसित करे, ताकि वह अदन की वाटिका के सदृश्य दिखाई दे। एक याजकीय दृष्टिकोण से, मनुष्यजाति का कार्य पूरे संसार को परमेश्वर के पवित्र स्थान में परिवर्तित करना और सदा उसकी सेवा करना है।

> जब परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप में सृजा, तो ऐसा उसने बिना किसी कारण से नहीं किया। उसने हमें वह दिया जिसे हम अक्सर "सृष्टि का सांस्कृतिक आदेश" कहते हैं। उस पर ध्यान देना सहायक है, न केवल पृथ्वी पर हमारे अधिकार के आधार पर, जिसे हम अक्सर शासन करने के साथ जोड़ते हैं, अर्थात् राजा के समान एक भूमिका में, बल्कि याजकों की भूमिका के आधार पर भी। यद्यपि पाप का इस संसार में तब तक प्रवेश नहीं हुआ था, फिर भी उत्पत्ति 2 में

> अदन की तस्वीर मंदिर, या वाटिकारुपी पवित्र स्थान के रूप में है, इसलिए सृष्टि में हमारी भूमिका अदन की सीमाओं को पृथ्वी की अंतिम छोर तक पहुँचाने की थी। अंततः, यह मसीह में, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में पूरा होता है। उस याजकीय कार्य के केंद्र में आराधना भी है, ताकि जो कुछ भी हम करें वह परमेश्वर की महिमा के लिए है, सृष्टि के उस आदेश को पूरा करने के लिए है। सेवा - और वे दो विचार वहां हैं जो याजकीय कार्य और साथ ही राजा के कार्य से संबंधित हैं। इसलिए, सृष्टि का हमारा सांस्कृतिक आदेश भंडारी बनना है, परमेश्वर के साथ संबंध रखते हुए उसके लोग बनना है, वाटिकारुपी पवित्रस्थान की सीमाओं का विस्तार करना है, आराधना, भक्ति, आज्ञाकारिता में ऐसा करना है, उसकी सृष्टि के सारे स्त्रोतों को खोजना है, और निःसंदेह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में इसका प्रतिफल मिलेगा।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

> उत्पत्ति की पुस्तक में हम सांस्कृतिक आदेश के बारे में सीखते हैं। यह मानवीय सेवा का एक बहुत महत्वपूर्ण भाग है कि जो हम परमेश्वर की दृष्टि में हैं वैसे ही हम जीवनरुपी इस दान को जीएँ भी। निःसंदेह हम किसी भी तरह से नहीं सोचते कि सांस्कृतिक आदेश को चाहिए कि यह सुसमाचार प्रचार के आदेश को नजरअंदाज करने में हमारी अगुवाई करे या उससे आगे बढ़ जाए। दोनों ही परमेश्वर की ओर से हैं, दोनों ही वैधानिक हैं, दोनों ही महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक आदेश एक महान वरदान और सौभाग्य है। यह वास्तव में हमारा विधाता परमेश्वर है जो अपने स्वरूप में रचे अपने लोगों को स्वयं परमेश्वर के विश्वासयोग्य राजदूतों और प्रतिनिधियों के रूप में उत्तरदायित्व लेने, देखभाल करने, भंडारी बनने, और सृष्टि की महानता को विकसित करने का निमंत्रण दे रहा है। और इसलिए, जिस प्रकार हमें सृष्टिकर्त्ता के स्वरूप में सृजनात्मक होना है, उसी प्रकार हमें सृष्टि के आदेश को पूरा करने के लिए अनुग्रहकारी, उदार होना है और लोगों की जरूरतों को पूरा करना है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

याजक के कार्यभार में पहले परिवर्तन मनुष्यजाति के पाप में पतन के समय हुए, जब उन्होंने उत्पत्ति 3 में भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के वर्जित फल को खाया।

पतन। इस समय पर, आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया गया था और उन्हें पापों के लिए प्रायश्चित की भेंटों को चढ़ाना आरंभ करना आवश्यक था। हम उत्पत्ति 3:21 से ही इस विषय पर पर्याप्त उल्लेखों को पाते हैं, जहाँ परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जानवरों के चमड़े से ढक दिया था। हम उत्पत्ति 4:4 में हाबिल द्वारा यहोवा को चढ़ाए गए जानवर के बलिदान में इस क्रिया के प्रति स्पष्ट उल्लेखों को पाते हैं।

इस समय के दौरान अन्य उल्लेख भी पाए जा सकते हैं : जैसे उत्पत्ति 8:20 में जलप्रलय के बाद नूह ने भेंट चढ़ाई; उत्पत्ति 3:2122:13 में अब्राहाम ने मेम्ने को चढ़ाया और उत्पत्ति 2131:54 में याकूब ने भेंट चढ़ाई। इस समय के दौरान परिवार के मुखिया अपनी संतानों के लिए के लिए याजक के रूप में सेवा करते थे, और केवल कुछ ही याजकों को उससे अधिक विस्तृत क्षेत्रों में सेव सेवा के लिए बुलाया जाता था।

एक और परिवर्तन जो इस समय के दौरान हुआ, वह था याजकीय सेवा का स्थान । पतन से पहले, यह कार्य केवल अदन में परमेश्वर के वाटिकारुपी पवित्रस्थान में होता था। परंतु जब उत्पत्ति 3 में मनुष्यजाति को अदन की वाटिका में से बाहर निकाल दिया गया, तो परमेश्वर ने अपने याजकों को निर्देश दिया कि वे उसकी आराधना के लिए अन्य स्थानों को अलग करें और उन स्थानों पर स्मारक पत्थरों को लगाएँ जहाँ उसने उनसे भेंट की थी। सृष्टि की रचना की अवधि के विपरीत इतिहास के उस समय पर किसी एक स्थान का वर्णन पृथ्वी पर परमेश्वर के निवास-स्थान के रूप में नहीं किया जा सकता था।

अगले मुख्य परिवर्तन मिस्र की गुलामी से इस्राएल के निर्गमन के दिनों में हुए।

निर्गमन। मिस्र के फिरौन द्वारा 400 वर्षों तक इस्राएल राष्ट्र को गुलामी में रखने के बाद उन्होंने परमेश्वर की दुहाई दी और उसने उन्हें अपने सामर्थी आश्चर्यकर्मों के प्रदर्शन के द्वारा छुड़ाया। इस घटना का विवरण बाइबल की दूसरी पुस्तक, जिसका शीर्षक निर्गमन है, में मिलता है।

इस समय के दौरान, परमेश्वर ने अपने याजकीय कार्य को मनुष्यजाति से सीमित करके इस्राएल राष्ट्र तक कर दिया। जैसा कि उसने निर्गमन 19:6 में कहा, इस्राएल को उसके लिए याजकों का समाज बनना था। उसने लेवी के गोत्र को भी अपने विशेष सेवकों के रूप में अलग किया। उस गोत्र के अधिकांश लोगों ने कम संख्या में नियुक्त ऐसे लेवियों की सहायता करने की भूमिकाओं में कार्य किया जो उस राष्ट्र के याजकों के रूप में कार्य करते थे। लेवी गोत्र में भी केवल हारून और उसके वंश को ही याजक बनने के लिए चुना गया था, एक समय में केवल एक व्यक्ति महायाजक के रूप में सेवा कर सकता था। हम लैव्यव्यवस्था और गिनती की पुस्तक के कुछ भागों में हारून के याजकपन की नई जिम्मेदारियों के बारे में परमेश्वर के निर्देशों को पाते हैं।

परमेश्वर ने इस अवधि के दौरान मिलाप वाले तंबू की रचना के बारे में निर्देश दिया। मिलाप वाला तंबू एक बड़ा, अलंकृत तंबू था जिसे इस्राएली अपनी यात्राओं में अपने साथ उठा कर चल सकते थे। इसने मूलभूत रूप से उसी कार्य को पूरा किया जिसे सृष्टि के समय अदन की वाटिका ने पूरा किया था; यह परमेश्वर का पृथ्वी पर का पवित्रस्थान था, वह स्थान जहाँ वह अपने लोगों के साथ चला और फिरा करता था। पतन के बाद, परमेश्वर ने समय समय पर अपने लोगों के साथ विभिन्न स्थानों पर भेंट की। परंतु मिलाप वाले तंबू की रचना के साथ परमेश्वर ने एक बार फिर अपनी आराधना को एक ही स्थान पर केंद्रित किया। और आराधना के इस स्थान का क्रियान्वयन और रख-रखाव परमेश्वर के चुने हुए सेवकों, अर्थात् याजकों के द्वारा होना था। मिलाप वाले तंबू के लिए दिए गए निर्देश, और इसकी रचना का विवरण निर्गमन 25-40 में देखा जा सकता है।

परमेश्वर द्वारा निर्गमन के दौरान याजकपन में किए गए परिवर्तनों का उद्देश्य मनुष्यजाति के लिए अपनी मूल योजना को पूरा करने के लिए आगे कदम बढ़ाना था। उसकी योजना पहले हारून के परिवार से याजकों का प्रयोग करके इस्राएल को याजकों का एक समाज बनाने की थी, और तब इस विशेष राष्ट्र की विश्वासयोग्यता और सेवकाई के द्वारा अपने राज्य को संसारभर में फ़ैलाने की थी।

पुराने नियम के याजक के कार्यभार में अंतिम परिवर्तन इस्राएल के राजतंत्र के दौरान आए, जब इस्राएल राष्ट्र प्रतिज्ञा के देश में बस गया और एक राजा के शासन के अधीन रहने लगा।

राजतंत्र। राजतंत्र की अवधि का इस्राएल के पहले राजा शाऊल के साथ एक दिखावटी आरंभ होता है। परंतु यह शाऊल के उत्तराधिकारी दाऊद और उसके वंशज के साथ गंभीरता से आरंभ होता है।

जब इस्राएल के राजा शासन कर रहे थे, तो वे याजकीय सेवकाई में बड़ी निकटता से जुड़े हुए थे। उदाहरण के लिए, दाऊद ने मंदिर के लिए योजनाएँ बनाईं। उसने सुनिश्चित किया कि याजकीय सेवाएँ की जाएँ। उसने याजकीय परिवारों को संगठित किया और उनके लिए विशेष कार्य नियुक्त किए। इन सब कार्यों का विवरण 1 इतिहास 1 15 और 16 और 23-26 28 में पाया जा सकता है।

दाऊद ने अन्य लेवी परिवारों को भी कार्य सौंपे, विशेषकर द्वारपालों और संगीतज्ञों के रूप में। उसने समय समय पर याजकों के साथ मिलकर बलिदान भी चढ़ाए और लोगों पर आशीष की घोषणा भी की, जैसा कि 2 शमूएल 6:17-18 में देखा जा सकता है। एक बार तो उसने अपने राजकीय वस्त्र को लेवी के मखमली एपोद से बदल लिया था, जैसा कि 1 इतिहास 15:27 में वर्णन किया गया है। ये कार्य दाऊद के समय के बाद भी चलते रहे, जैसा कि हम एज्रा 8:20 में देखते हैं।

दाऊद के दिनों में महायाजकों के रूप में सेवा करने की अनुमति केवल दो परिवारों को थी : सादोक और एब्यातार नामक हारून के वंशजों को। इस जानकारी का वर्णन 1 इतिहास 18:16 में पाया जाता है।

दाऊद के बाद, उसके पुत्र सुलैमान ने परमेश्वर के राज्य पर एक राजा के रूप में शासन किया, और उसने स्वयं को दाऊद से भी अधिक याजकीय सेवाओं में सम्मिलित किया। सुलैमान ने मंदिर की रचना के कार्य को संचालित किया। उसकी देखरेख में अनगिनित बलिदान चढ़ाए गए। उसने मंदिर में लोगों की प्रार्थना में अगुवाई की और उन पर आशीषों की घोषणा की, जैसा कि उसके पिता ने भी किया था। इन सब बातों का विवरण 1 इतिहास 21:28; 2 इतिहास 3-6 और 1 राजा 8-9 में दिया गया है। उनका उल्लेख दाऊद द्वारा लिखे बहुत से भजनों में भी हुआ है, जिसमें भजन 5, 11, 18, 27, 65, 66 और 68 सम्मिलित हैं।

सुलेमान ने भी एक और बार महायाजकीय वंश को सीमित कर दिया। क्योंकि एब्यातार ने देशद्रोह किया था, इसलिए सुलैमान ने उसे और उसके परिवार को याजकीय सेवकाई से बाहर कर दिया, जैसा कि हम 1 राजा 2:26, 27, 35 में देखते हैं। यह न्यायी एली के घराने को सुनाए गए न्याय की पूर्णता थी, जो न्यायियों के समय में पहले का एक अविश्वासयोग्य याजक था, जिसका वर्णन 1 शमूएल 2:27-36 में मिलता है।

जबकि मंदिर की कुछ विशेष सेवाएँ केवल याजकों के लिए ही रखी गई थीं, फिर भी यहूदा के राजाओं ने स्वयं को याजकीय सेवा के कार्यों में सम्मिलित करते हुए अक्सर दाऊद और सुलैमान के उदाहरणों का अनुसरण किया। वे वास्तव में सुलैमान के मंदिर में राजकीय याजक ही थे।

राजतंत्र की अवधि अंततः उस समय खत्म हो गई जब बेबीलोन के लोगों ने 587 या 586 ई. पू. में यरूशलेम और सुलैमान के मंदिर को नष्ट कर दिया, और लोगों को निर्वासन में ले गए। परंतु 515 ई. पू. के लगभग निर्वासन के बाद पुनर्स्थापना के प्रयासों के दौरान लौटे हुए इस्राएलियों द्वारा एक दूसरे मंदिर का निर्माण किया गया। उस समय यहेजकेल और जकर्याह भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की कि परमेश्वर ने यहोशू को, जो कि सादोक के वंश से था, महायाजक के रूप में नियुक्त किया है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि यहोशू दाऊद के एक वंशज जरूबाब्बेल के साथ मिलकर सेवा करेगा जो पुनर्स्थापना के कार्य में अगुवाई करेगा। दुखद रूप से, यरूबाब्बेल और यहोशू के प्रयास ज्यादा समय तक नहीं चले। उस समय के दौरान बहुत से याजक और लेवी परमेश्वर से दूर हो गए, और इसी तरह से इस्राएल के बहुत से लोग भी। इस्राएल की आराधना भ्रष्ट हो गई थी, और परमेश्वर का दंड सैंकड़ों वर्षों तक उस राष्ट्र पर बना रहा।

ऐसा होने पर भी इस समय के दौरान इस्राएल के लोगों ने दाऊद और सुलैमान के दिनों की ओर देखना जारी रखा। उनमें से विश्वासयोग्य लोगों ने यह स्मरण रखा कि उस समय क्या होता था जब राजा और याजक परमेश्वर की सेवा वैसे किया करते थे, जैसे उन्हें करनी चाहिए थी। और उन्होंने एक नए दिन की आशा की जब राजकीय और याजकीय जिम्मेदारियाँ और अधिक भव्य रूप से निभाई जाएँगी और परमेश्वर अपने पश्चातापी लोगों का अपनी विशेष उपस्थिति की आशीषों में स्वागत करेगा।

अब जबकि हमने उन अपेक्षाओं पर विचार कर लिया है जिनकी रचना याजकीय कार्यभार के ऐतिहासिक विकास के द्वारा की गई थी, इसलिए हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि कैसे पुराने नियम की विशेष भविष्यद्वाणियों ने भी भविष्य के याजकों के लिए अपेक्षाओं की रचना की।

विशेष भविष्यद्वाणियाँ

इस भाग में, हम याजक के कार्यभार के विषय में पुराने नियम की तीन विशेष भविष्यद्वाणियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। वह पहली अपेक्षा जिस पर हम ध्यान देंगे, यह है कि अंततः एक महान महायाजक होगा जिसकी सेवा कभी समाप्त नहीं होगी।

विभिन्न तरीकों में पुराने नियम ने यह दर्शाया है कि एक दिन याजक पद एक अकेले महायाजक में पूरा होगा जो सदैव सेवा करता रहेगा। परमेश्वर ने मूसा के समय में हारून को महायाजक के रूप में नियुक्त किया था, परंतु पुराना नियम भी उस समय की ओर देख रहा था जब उसके याजक पद से भी बड़ा कोई आ जाएगा। इसलिए हारून का याजक पद तब तक अस्थाई रहा जब तक कि वह दिन न आ जाए जब महान महायाजक आएगा। वास्तव में, पुराने नियम की आशा यह थी कि ये दोनों कार्यभार मिलकर महान महायाजक और मसीहारुपी राजा के अधीन एक हो जाएँ।

शायद इस विचार का सबसे अधिक स्पष्ट कथन भजन संहिता 110:4 में पाया जा सकता है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा : “कि तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का महायाजक है”। (भजन संहिता 110:4)

इस भजन के संदर्भ में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि याजक के रूप में मसीह की सेवकाई कभी समाप्त नहीं होगी। यह सदैव बनी रहेगी।

इब्रानियों 7 इसी विचार को लेता है और इसका परमेश्वर के लोगों के महायाजक होने के यीशु के कार्यभार से सीधा संबंध दर्शाता है। यह अध्याय यह भी दर्शाता है कि मसीह का स्थाई याजकपन इस तथ्य के द्वारा स्थापित होता है कि यह नई वाचा के अनुरूप है, जिसके बारे में यिर्मयाह ने यिर्मयाह 31:31 में भविष्द्वाणी की है। उस अनुच्छेद में यिर्मयाह ने यह दर्शाया है कि नई वाचा में जीवन सिद्ध और अद्भुत होगा। और इसी के समान, इब्रानियों के लेखक ने यह तर्क दिया है कि इस उत्तम वाचा के लिए एक उत्तम याजकपन की आवश्यकता होगी - ऐसा याजक जो सदा बना रहे।

भजन 110:4 का उद्धरण देते हुए इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 7:21-22 में इसे इस प्रकार से लिखता है :

> प्रभु ने शपथ खाई और वह उससे फिर न पछताएगा कि तू युगानुयुग याजक है। इस प्रकार यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा। (इब्रानियों 7:21-22)

अब निष्कर्ष यह है कि पुराने नियम ने विशेषकर यह भविष्यद्वाणी की कि नई वाचा में परमेश्वर एक महान महायाजक को नियुक्त करेगा जिसकी सेवा कभी समाप्त नहीं होगी।

याजक के कार्यभार से दूसरी अपेक्षा जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम में विशेष तौर से की गई थी, यह थी कि महान महायाजक एक राजा के रूप में शासन करेगा।

जैसे कि हम पहले देख चुके हैं, मनुष्यजाति ने पहले याजकों और राजाओं दोनों के रूप में अदन की वाटिका में सेवा की थी। और स्वयं मलिकिसिदक ने भी दोनों ही रूपों में सेवा की। और यद्यपि ये दोनों कार्यभार इतिहास में बाद में विभाजित हो गए, फिर भी पुराने नियम ने यह भविष्यद्वाणी की कि वे अंततः मसीह के व्यक्तित्व में फिर से एक हो जाएँगे।

आइए हम एक बार फिर से भजन 110 को देखें, इस समय पद 2-4 को, जहाँ प्रभु ने भविष्य के मसीह के बारे में प्रतिज्ञा की है :

> तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा; तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन करेगा . . . यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा कि तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है”। **(भजन संहिता 110:2-4)**

यहाँ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि मसीह दाऊद के वंश से होगा जो राजा और याजक दोनों के रूप में सेवा करेगा।

यही विचार जकर्याह 6:13 में भी पाया जाता है, जहाँ हम भविष्य के मसीहा के बारे इस भविष्यद्वाणी को पाते हैं :

> वह उसके सिंहासन के पास एक याजक भी होगा। **(जकर्याह 6:13)**

पुराने नियम के अनुसार, याजक के कार्यभार से एक अपेक्षा यह थी कि मसीह इसे राजा के कार्यभार के साथ जोड़ देगा।

याजक के कार्यभार से भविष्यद्वाणी की गई तीसरी विशेष अपेक्षा यह थी कि परमेश्वर के लोग स्वयं याजकों का समाज बन जाएँगे।

जैसा कि हमने उत्पत्ति 2:15 में देखा, मनुष्यजाति अदन की वाटिका में याजकीय रूप में सेवा करने के द्वारा आरंभ हुई। इसलिए यह चकित करने वाला नहीं होना चाहिए कि पाप में पतन के बाद हमारी पुनर्स्थापना में छुटकारा पाई हुई मनुष्यजाति एक बार फिर परमेश्वर के याजकों के रूप में सेवा करेगी। और वास्तव में, विशेष तौर से इसकी भविष्यद्वाणी निर्गमन 19:6 और यशायाह 61:6 जैसे स्थानों पर हुई है।

ये दोनों अनुच्छेद दर्शाते हैं कि जब मसीहा राजा के रूप में राज्य करेगा, तो परमेश्वर के सारे लोग विश्वासयोग्य याजकों के रूप में सेवा करेंगे, और एक राष्ट्र या याजकों के समाज के रूप में एक हो जाएँगे। धर्मविज्ञानी इसका उल्लेख अक्सर सारे विश्वासियों के याजकपन के रूप में करते हैं। और प्रेरित पतरस ने यह दर्शाया कि यह उसके दिनों में पहले से ही पूरा हो रहा था। सुनिए उसने 1 पतरस 2:5 में क्या लिखा :

> तुम भी . . . आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। **(1 पतरस 2:5)**

वाचाई मेल कराने वाले होने के रूप में पुराने नियम के याजकों ने निरंतर अपने लोगों को परमेश्वर के साथ उनके वाचाई संबंध के महत्व को स्मरण दिलाया। और उस सर्वनाश के संदर्भ में जो पाप सृष्टि में लेकर आया था, परमेश्वर के राज्य के निरंतर विकास और उसके उद्देश्यों की पूर्णता के लिए याजकीय कार्यभार वहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक था। परंतु ये उद्देश्य पूरे इतिहास के उस सबसे महत्वपूर्ण याजक के बिना कभी पूरे नहीं हो सके - अर्थात् उस मसीहा के बिना जिसकी संपूर्ण पुराना नियम बाट जोह रहा था।

याजक के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखने के बाद, अब हम हमारे अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : यीशु में याजक के कार्यभार की पूर्णता।

यीशु में पूर्णता

हमें इस बात पर ध्यान देने से आरंभ करना चाहिए कि सुसमाचार और नए नियम की पत्रियाँ स्पष्ट तौर पर यह कहती हैं कि यीशु ने याजक के कार्यभार की पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा किया है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 3:1 में हम यीशु की याजकीय सेवकाई की स्पष्ट पुष्टि के बारे में पढ़ते हैं:

> महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।(इब्रानियों 3:1)

और इब्रानियों 4:14 इसे इस प्रकार दर्शाता है :

> हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है . . . अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु। (इब्रानियों 4:14)

हमारे बड़े महायाजक होने के रूप में यीशु वह है जो परमेश्वर और हमारे बीच में बिचवई करता है, ताकि हम परमेश्वर की विशेष, पवित्र उपस्थिति में ग्रहण किए जा सकें। वही है जो यह सुनिश्चित करता है कि हम परमेश्वर के लिए शुद्ध और पवित्र हों, ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकें और उसकी वाचा की आशीषों को प्राप्त कर सकें।

हम उन्हीं श्रेणियों को देखने के द्वारा यीशु में याजक के कार्यभार की पूर्णता का अध्ययन करेंगे जिनका प्रयोग हमने पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर चर्चा करने के लिए किया था। पहला, हम यह देखेंगे कि यीशु ने इस कार्यभार की योग्यताओं को कैसे पूरा किया। दूसरा, हम देखेंगे कि उसने इसके कार्यों को कैसे किया। और तीसरा, हम देखेंगे कि उसने याजक के कार्यभार की अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया। आइए, पहले यह देखें कि यीशु याजक के कार्यभार की योग्यताओं को कैसे पूरा करता है।

योग्यताएँ

बहुत से लोगों ने यह दर्शाया है कि यीशु ने कभी मंदिर में सेवा नहीं की या आराधना में अगुवाई नहीं की, और वह हारून के वंश से भी नहीं था। इसलिए, नए नियम के लेखक यह क्यों कहते हैं कि यीशु ने याजकीय कार्यों और सेवाओं को किया? और कैसे वह याजक के कार्यभार को संचालित करने के योग्य था? साधारण शब्दों में कहें तो, यीशु इस कार्यभार के लिए पूरी रीति से योग्य था क्योंकि वही पुराने नियम की राजकीय याजक की आशा की पूर्णता है जिसे स्वयं परमेश्वर ने सारी याजकीय सेवाओं पर नियुक्त किया।

हम उन्हीं योग्यताओं के आधार पर याजक के रूप में यीशु की योग्यताओं को देखेंगे जो हमने याजकीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि में दर्शाई थीं। पहली, हम ध्यान देंगे कि यीशु को परमेश्वर के द्वारा याजक पद पर नियुक्त किया गया था। और दूसरी, हम देखेंगे कि वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य भी था। आइए सबसे पहले हम यह देखें कि यीशु को परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया था।

परमेश्वर के द्वारा नियुक्त

इब्रानियों 5:4-10 स्पष्ट रूप से कहता है कि परमेश्वर ने यीशु को महायाजक के रूप में नियुक्त किया। सुनिए यह क्या कहता है :

> और यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से नहीं ली . . . [बल्कि] उसे परमेश्वर की ओर से महायाजक का पद मिला। (इब्रानियों 5:4-10)

क्योंकि परमेश्वर ने उसे नियुक्त किया था, इसलिए यीशु ने निश्चित रूप से इस योग्यता को पूरा किया। इसके साथ-साथ, हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि यह नियुक्ति कुछ असामान्य थी क्योंकि यीशु याजक-संबंधी लेवीय वंशावली से नहीं था। आपको याद होगा कि पुराने नियम के आरंभ में परमेश्वर ने कई विभिन्न तरह के लोगों को याजक बनने की अनुमति दी थी। परंतु पुराने नियम के अंत में, उसने याजकपन की सेवकाई का कार्य केवल सादोक के वंश को ही दे दिया था। फिर भी यीशु की नियुक्ति उतनी असामान्य नहीं है जितनी यह पहले पहल प्रतीत होती है।

अदन की वाटिका में, आदम को परमेश्वर के वासल राजा के रूप में पृथ्वी पर शासन करने के लिए नियुक्त किया गया था। परंतु उसका शासन भी एक याजकीय सेवा था, जिसकी रचना पूरे संसार को एक ऐसे स्थान में परिवर्तित कर देने के लिए की गई थी जो परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति के लिए उपयुक्त हो। और याजक और राजा के कार्यभार राजतंत्र की अवधि के राजाओं के साथ भी गहराई से संबंधित थे।

बिल्कुल इसी तरह, मसीह एक राजकीय याजक है। वह परमेश्वर के सिद्ध वासल राजा के रूप में शासन करता है। परंतु उसका शासन याजकीय सेवा भी है जो हमें और पृथ्वी को परमेश्वर की महिमामयी उपस्थिति के लिए तैयार कर रहा है। इस प्रकार, मसीह वास्तव में उसे पूरा करता है जिसे करने में आदम और उसके बाकी के वंश असफल हो गए।

एक बार फिर से सुनिए कि दाऊद ने महान मसीहा के बारे में भजन 110:1-4 में क्या कहा :

> मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है: “तू मेरे दहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।” तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन करेगा . . . यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, “तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है”। (भजन 110:1-4)

इस अनुच्छेद में, मसीहा - जिसे दाऊद ने “मेरा प्रभु” कहा है - का वर्णन उसके सामर्थी राजदंड और शासन की राजकीय उपमा के साथ और एक याजक के रूप में किया गया है।

दाऊद की भविष्यद्वाणी ने उस दिन की ओर देखा जब उसका एक वंशज ऐसे राजकीय वैभव के साथ उठ खड़ा होगा कि जो न केवल राजकीय सेवा को पूरा करेगा, बल्कि सारी याजकीय सेवा को भी पूरा करेगा, जैसे कि मलिकिसिदक ने किया था। इसी कारण इब्रानियों 7:14 इस बात पर बल देता है कि यीशु यहूदा के राजकीय गोत्र से है, न कि लेवी के याजकीय गोत्र से। यह सच्चाई कि यीशु एक यहूदी राजा और एक महान महायाजक था, इस बात का प्रमाण है कि वह लंबे समय से प्रतीक्षारत दाऊद का पुत्र, अर्थात् मसीह है।

> शायद इसमें से बहुत कुछ उत्पत्ति 14 और मलिकिसिदक की ओर लेकर जाता है जिसका वर्णन राजा और याजक दोनों के रूप में किया गया है क्योंकि अब्राहम बलिदान चढ़ाता है और मलिकिसिदक उसे ऐसे स्वीकार करता है जैसे कि याजक करता है। परंतु इसके साथ-साथ, वह शालेम का राजा भी है। इसलिए इसमें ऐसा काफी कुछ है जो बाइबल की बाकी की कहानी में जहाँ राजा और याजक एक ही हैं, बार-बार दिखाई देता है। यह भजन 110 है जहाँ एक राजा को "धार्मिकता का निरीक्षक" कह कर दर्शाया गया है। इसमें स्पष्टतया शासकीय पहलू जुड़े हुए है, परंतु यदि आप धार्मिकता का निरीक्षण करते हैं, तो आप याजकीय कार्य भी कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर की धार्मिकता सारे संसार के धर्मी बनने की उसकी इच्छा है। और जैसा कि राजा उसमें सम्मिलित होता है, तो भले ही वहाँ पर निर्धारित याजक हों, फिर भी राजा एक याजकीय तरीके से कार्य कर रहा है। तब, निःसंदेह

> जब आप यीशु के पास आते हैं, आप इन सभी धाराओं को आपस में मिलता हुआ पाते हैं, ताकि हम उसे भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में पुकार सकें। इब्रानियों की पुस्तक में लगभग यही बात है, वह नया मलिकिसिदक है। वह नई वाचा में उस बात का मानवीकरण है जो परमेश्वर वास्तव में पुराने नियम की वाचा में था।
>
> — डॉ. स्टीव हार्पर

यह देखने के बाद कि यीशु को परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया था, अब हम इस तथ्य की ओर देखने के लिए तैयार हैं कि उसने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने की शर्त को भी पूरा किया।

परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, याजकों को केवल परमेश्वर की आराधना और सेवा करने के द्वारा और परमेश्वर के द्वारा उन्हें सौंपे गए कर्त्तव्यों को सावधानी के साथ निभाने के द्वारा उसके प्रति विश्वासयोग्यता के एक विशेष परिमाप को दर्शाने की आवश्यकता होती थी। और उनके कर्त्तव्यों का एक प्राथमिक कारण यह सुनिश्चित करना था कि परमेश्वर के लोग भी परमेश्वर के प्रति नैतिक और धार्मिक क्रिया के आधार पर विश्वासयोग्य हों, ताकि वे बिना किसी डर के परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकें। यह एक मुख्य सेवा थी जो याजक किया करते थे।

यीशु ने इन सारी शर्तों या माँगों को पूरी सिद्धता के साथ पूरा किया। उसने सदैव केवल परमेश्वर की ही आराधना और सेवा की। और उसने सदैव पिता की आज्ञाओं का पालन किया। और इस याजकीय सेवकाई के द्वारा, यीशु हमें परमेश्वर की विशेष पवित्र उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए तैयार करने में सक्षम है।

सामान्य भाव में, हम चारों सुसमाचारों की पूरी विषय-वस्तु को परमेश्वर के प्रति यीशु के विश्वासयोग्य रहने के प्रमाण के रूप में देख सकते हैं। उसने अपने पिता के द्वारा दी गई आज्ञा का पालन किया; उसने केवल वही कहा जो उसके पिता ने उसे कहने के लिए दिया था; और उसने केवल उन्हीं कार्यों को किया जिन्हें उसने अपने पिता को करते हुए देखा था। परंतु नए नियम में ऐसे कई अनुच्छेद हैं जो इन विचारों को स्पष्ट रूप से सारगर्भित करते हैं, जैसे मत्ती 26:42; यूहन्ना 5:19, 14:31 और 17:4; और इब्रानियों 7:5-7।

परमेश्वर के प्रति यीशु की सिद्ध विश्वासयोग्यता हमारे महान महायाजक के रूप में उसकी सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। परमेश्वर के प्रति पूरी तरह विश्वासयोग्य होने के द्वारा ही वह अपने अनुयायियों को सिद्धता के साथ पवित्र बना सकता है, और हमें अनंतकाल के लिए परमेश्वर की विशेष पवित्र उपस्थिति में वास करने के योग्य बना सकता है। और हम पवित्रशास्त्र में इसके बारे में बहुत से उदाहरणों को पाते हैं।

उदाहरण के लिए, यूहन्ना 17:19 में अपनी महायाजकीय प्रार्थना में उसने विशेष रूप से हमारी पवित्रता के लिए प्रार्थना की। और रोमियों 15:16 और 1 कुरिन्थियों 6:11 के अनुसार, परमेश्वर ने हमें अपनी दृष्टि में पवित्र बनाने के द्वारा उस प्रार्थना का उत्तर पहले ही दे दिया था।

यह देख लेने के बाद कि यीशु ने याजकपन की योग्यताओं को पूरा किया, अब हम इस ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं कि उसने एक याजक के कार्यों को किस प्रकार किया।

कार्य

हम याजक के रूप में यीशु के कार्य की जांच उन्हीं याजकीय भूमिकाओं की ओर देखने के द्वारा करेंगे जिनकी पहचान हमने पुराने नियम में की थी : पहली, परमेश्वर के लोगों की याजकीय अगुआई; दूसरी याजकीय धार्मिक कार्य; और तीसरी, याजकीय मध्यस्थता। आइए सबसे पहले हम यह देखें कि यीशु ने याजकीय अगुआई के कार्य को कैसे पूरा किया।

अगुआई

यद्यपि यीशु की अगुवाई के कई पहलुओं पर हम प्रकाश डाल सकते हैं, परंतु हम उन्हीं तीन पहलुओं पर ध्यान देंगे जिनका हमने यीशु के याजकीय कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि के अपने सर्वेक्षण में उल्लेख किया था, इसका आरंभ हम आराधना में की गई उसकी अगुआई से करेंगे।

एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे महान महायाजक के रूप में ऊँचा किया जाएगा, यीशु ने इस्राएल जाति और अपने अनुयायियों के बीच सच्ची और आत्मिक आराधना को बढ़ाने के लिए बहुत से कार्य किए। उदाहरण के लिए, मत्ती 21:12-13 में उसने व्यापारियों और सर्राफों को मंदिर से बाहर खदेड़ दिया क्योंकि वे परमेश्वर के प्रार्थना के घर को डाकुओं की खोह बना रहे थे।

परंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उसने अपने लोगों के लिए यह संभव कर दिया कि वे स्वर्गीय मंदिर के पवित्र स्थान में परमेश्वर तक अपनी पहुँच बना सकें। पुराने नियम में मिलाप का तंबू और बाद में मंदिर ऐसे स्थान थे जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी आपस में मिल जाते थे। वे विशेष स्थान थे जहाँ आराधक एक साथ पृथ्वी पर और परमेश्वर के स्वर्गीय दरबार में उपस्थित होते थे। परंतु नए नियम में, यीश ने स्वयं इस कार्य को अपने ऊपर ले लिया। इसलिए, परमेश्वर के स्वर्गीय दरबार के विशेष भवन में जाने की अपेक्षा, यीशु व्यक्तिगत तौर पर हमें वहाँ पर ले चलता है। उसके द्वारा, हम परमेश्वर की विशेष, पवित्र उपस्थिति में स्वीकार किये जाते हैं, जहाँ हम उसकी संगति की आशीषों को प्राप्त करते हैं।

सुनिए इब्रानियों 10:19-20 इसके बारे में किस प्रकार बात करता है :

> इसलिये हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है, और इसलिये कि हमारा ऐसा महान् याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है, तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप जाएँ। **(इब्रानियों 10:19-20)**।

यीशु ने लोक और धार्मिक रीतियों के निर्णयों या न्यायों में विशेष अगुवाई के रूप में याजकीय अगुवाई भी प्रदान की।

उदाहरण के तौर पर, मत्ती 12:1-8 में यीशु ने याजकीय न्याय को प्रदान किया जब उसके चेलों पर सब्त के दिन का उल्लंघन करने का दोष लगाया गया था। मरकुस 7:19 में उसने भोजन की रस्म-संबंधी शुद्धता के विषय में निर्णय या न्याय दिए। और मत्ती 8 में कोढ़ी को शुद्ध करने के बाद उसने याजकीय घोषणा की कि वह व्यक्ति धार्मिक रीति के अनुसार शुद्ध था, और उसने उसे आदेश दिया कि वह उचित बलिदान लेकर मंदिर में जाए। यद्यपि यीशु ने उस व्यक्ति को आदेश दिया था कि वह जाकर स्वयं को याजकों को दिखाए, परंतु यह उनकी अवस्था को जांचने की विनती करने के उद्देश्य से नहीं था। बल्कि, मत्ती 8:4 के अनुसार ऐसा करना यीशु की सामर्थ्य और उसके अधिकार की गवाही देने के लिए था।

तीसरे प्रकार की याजकीय अगुवाई जिसका उल्लेख हमने किया है, वह है शिक्षा। और यीशु ने इस कार्य को भी अच्छी तरह से किया।

अब, यह सच है कि इस्राएल में भिन्न प्रकार के शिक्षक थे। भविष्यद्वक्ता वे शिक्षक थे जो परमेश्वर की वाचा और इच्छा की घोषणा करते थे। माता पिता अपने बच्चों को सिखाते थे। रब्बी और धर्मवृद्ध अपने समुदायों को सिखाते थे। याजक विशेषकर पश्चाताप और विश्वासयोग्यता की शिक्षा देते थे ताकि परमेश्वर के लोगों का परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में स्वागत किया जाए। हम इसके एक उदाहरण को नहेम्याह 8 में देखते हैं। और यीशु की शिक्षा ने अक्सर इस याजकीय कार्य को पूरा किया।

उदाहरण के लिए, मत्ती 5-7 के पहाड़ी उपदेश में यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था के सच्चे उद्देश्य और इसके उपयोग को स्पष्ट किया ताकि वह उन लोगों की अगुवाई वाचाई विश्वासयोग्यता में कर सके जिन्होंने उसे सुना था। और पश्चाताप और विश्वासयोग्यता उसकी शिक्षा में निरंतर रूप से बने रहे, जैसा कि हम मत्ती 4:17, लूका 5:32 और यूहन्ना 14:15-24 में देखते हैं।

अब क्योंकि हम यह देख चुके हैं कि यीशु ने अगुवाई की याजकीय भूमिका को पूरा किया, इसलिए आइए हम अब यह देखें कि उसने धार्मिक रीतियों से संबंधित याजकीय कार्यों को कैसे पूरा किया।

धार्मिक रीतियाँ

इसमें कोई संदेह नहीं कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु उसकी याजकीय सेवकाई का सबसे महान धार्मिक कार्य था।

स्वयं यीशु ने इस्राएल के धार्मिक कार्यों में भाग लिया था। वास्तव में, उनमें से कईयों का उल्लेख यूहन्ना के सुसमाचार में किया गया है। परंतु क्रूस पर यीशु के बलिदान के अतिरिक्त इनमें से किसी धार्मिक कार्य ने परमेश्वर के लोगों के लिए छुटकारे के कार्य को पूरा नहीं किया। निःसंदेह, यीशु का क्रूसीकरण उसकी याजकीय सेवकाई का धार्मिक कार्य संबंधी सबसे महान पहलू था। मूसा की व्यवस्था इस्राएल से आज्ञाकारिता की मांग करती थी, परंतु क्योंकि परमेश्वर जानता था कि इस्राएल निरंतर आज्ञा का उल्लंघन करता रहेगा, इसलिए परमेश्वर ने इस्राएल को आदेश भी दिया कि उन्हें इन पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर के समक्ष बलिदान भी चढ़ाने होंगे। परंतु ये बलिदान जितने महत्वपूर्ण हों, उन्हें वर्ष दर वर्ष बार बार चढ़ाने की आवश्यकता थी - फिर भी उनमें से किसी ने भी इस्राएल के पापों को दूर नहीं किया। इसलिए यीशु ने आकर पाप के लिए स्वयं को एक सिद्ध बलिदान के रूप में बलिदान चढ़ाया। उसके पापक्षमा के बलिदान ने छुटकारे को इस प्रकार पूरा किया जैसा इस्राएल के बलिदान कभी नहीं कर पाए थे। और इस तरह से यीशु ने इस्राएल की याजकीय अपेक्षाओं को पापों के लिए सदैव-के-लिए एक बलिदान में पूरा किया।

> पुराने नियम के बलिदानों ने एक ऐसे दिन का पूर्वानुमान लगाया जब वहाँ पर एक ऐसा बलिदान होगा जो उनके पापों को एक ही बार में सदैव के लिए दूर कर देगा। और क्रूस पर यीशु की भूमिका का वर्णन बाइबल में पाप के लिए बलिदान के रूप में और उसके स्वयं का वर्णन उस बलिदान को चढ़ाने वाले याजक के रूप में किया गया है। एक भाव में वह उन दोनों कार्यों को पूरा करता है। वह परमेश्वर के मेम्ने को प्रदान करता है जो संसार के पापों को उठा ले जाता है। परंतु यीशु वह याजक भी है जो एक भाव में ऐसे बलिदान को प्रदान करने के लिए स्वयं को दे रहा है जो अन्य सभी बलिदानों को समाप्त कर देगा।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

> यीशु की मृत्यु और पुराने नियम के बलिदानों के बीच के संबंध को अनेक तरीकों से विकसित किया जा सकता है। मुख्य रूप से, पुराने नियम के बलिदानों को उस पुरानी वाचा में रखा जाना चाहिए जो परमश्वेर ने इस्राएल राष्ट्र को दी थी।

> बलिदान-संबंधी प्रणाली वह माध्यम था जिसके द्वारा लोगों के पापों को दूर किया गया; परमेश्वर का क्रोध हट गया; परमेश्वर और उसके लोगों में संबंध स्थापित हो गया। उन बलिदानों के बारे में हम कहते हैं कि वे प्रतीक हैं; वे प्रारूप हैं; वे किसी उत्तम की ओर संकेत करते हैं। यहाँ तक कि पुराने नियम में बहुत सारे ऐसे संकेत हैं कि एक जानवर का बलिदान कभी पापों को दूर करने में पर्याप्त नहीं होगा। इसका अभिप्राय कभी भी यह नहीं था कि यह अंततः पाप को हटा देगा। वे किसी बड़े या महान के आने के प्रारूप थे। परंतु वे मसीह के बलिदान की ओर संकेत करते हैं जिसमें वही है जो, उस बलिदान के समान, हमारा विकल्प है। वही है जो हमारा स्थान ले लेता है। वही है जो इसे एक बड़े रूप में करता है, क्योंकि वह मनुष्य है। वह हमारे मनुष्यत्व को ले लेता है। जबकि जानवरों के बलिदानों ने ऐसा नहीं किया। फिर भी वह पुत्र परमेश्वर है, पुत्र परमेश्वर जो देहधारी हुआ, जिससे वह हमारे विकल्प के रूप में, हमारे याजक के रूप में हमारे पापों को दूर करते हुए, और हमारे प्रतिनिधित्व के रूप में खड़े होते हुए अपनी स्वयं की धर्मी माँगों को पूरा करता है। और वह उन सारे बलिदानों को पूरा करता है जो उसकी ओर आगे को संकेत करते हैं, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की पुनर्स्थापना करता है, और हमें फिर से वैसा ही बनाता है जैसा परमेश्वर ने मूल से हमें बनाया था, अर्थात उसके अपने लोग, जो इस संसार में उसके लिए जीते हैं, उसकी सेवा करते हैं, और उसके स्वरूप रखने वालों के रूप में अपनी भूमिका और अपने कर्त्तव्य को पूरा करते हैं।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

जैसा कि हमने पहले देखा, पुराने नियम के याजकों को विभिन्न तरह की भेंटों को चढ़ाने की जिम्मेदारी थी, जिनमें पाप, धन्यवाद और संगति के बलिदान चढ़ाना भी सम्मिलित था। और क्रूस पर अपनी मृत्यु में, यीशु ने एकलौते बलिदान को चढाया, जिसने ऐसे प्रत्येक बलिदान के लिए गुणों से भरे हुए एक आधार की रचना की जो इतिहास में अब तक चढ़ाया गया था। प्रायश्चित के लिए पहले चढ़ाई गई प्रत्येक भेंट केवल उस भेंट का पूर्वाभास था, जिसे यीशु ने तब चढ़ाया, जब वह क्रूस पर मारा गया। इस सच्चाई को रोमियों 3:25 और 8:3, और 1 यूहन्ना 2:2 और 4:10 के अनुच्छेदों में सिखाया गया है।

केवल एक उदाहरण के रूप में, इब्रानियों 10:1-4 के शब्दों को सुनिए :

> व्यवस्था जिस में आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं . . . . परंतु उन के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे। (इब्रानियों 10:1-4)

पुराने नियम के बलिदानों ने आराधकों को बलिदानों के आधार पर नहीं, बल्कि इस रूप में लाभ पहुँचाया कि उन्होंने उस विशेष बलिदान का पूर्वाभास किया जो मसीह अंततः क्रूस पर पूरा करेगा। इससे भी आगे, जो लाभ उन्होंने पहुँचाया वह तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक यीशु उस एक बलिदान को न चढ़ा ले जिसकी ओर अन्य सभी बलिदान संकेत करते थे। इसी कारण पुराने नियम के बलिदान पाप को स्थाई रूप से दूर करने के योग्य नहीं थे। वे तो केवल ऐसे माध्यम थे जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपने क्रोध को टाल दिया और उस समय तक धीरज धरा जब तक कि यीशु के क्रूस पर मरने का समय नहीं आ गया।

इस संबंध में, यीशु केवल वह तत्व नहीं था जिसकी ओर पहले के सारे बलिदान संकेत करते थे। वह अंतिम प्रायश्चित भी था। अब क्योंकि प्रायश्चित की भेंटों की पूर्णता यीशु में पूरी हो गई है, इसलिए अब और कोई कारण नहीं है कि प्रतिबिंबों को चढ़ाने का कोई कारण नहीं है। इसी कारण मसीही प्रायश्चित के उन बलिदानों को नहीं चढ़ाते जिनका वर्णन पुराने नियम में किया गया है। ऐसा इसलिए नहीं है कि हम यह मानते हैं कि प्रायश्चित के बलिदान अनावश्यक हैं। इसके विपरीत, हम जानते हैं कि प्रायश्चित का बलिदान अत्यंत आवश्यक है। हम प्रायश्चित के बलिदानों को इसलिए नहीं चढ़ाते क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु के एक ही बलिदान ने सब समयों के परमेश्वर के सारे विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रायश्चित की आवश्यकता को पूरा कर दिया है। और इस एक कार्य के द्वारा उसने हमारी पवित्रता को सुरक्षित कर दिया है, और हमें परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में वास करने के योग्य बना दिया है।

जैसा कि हम इब्रानियों 10:10 में पढ़ते हैं :

> हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किये गए हैं। (इब्रानियों 10:10)

यीशु के बलिदान ने परमेश्वर के राज्य में नए युग का सूत्रपात्र किया; यह बंधुआई और परमेश्वर के लोगों के दंड के अंत का आरंभ था। इस एक बलिदान ने परमेश्वर की क्षमा को पृथ्वी के प्रत्येक राष्ट्र के लिए सीधे-सीधे उपलब्ध करा दिया। परंतु इसने कई अवश्विवासियों के प्रति परमेश्वर के धीरज और उसकी सहनशीलता के अंत का संकेत भी दिया।

जैसा कि हम प्रेरितों के काम 17:30 में पढ़ते हैं, मसीह के बलिदान से पहले परमेश्वर उन लोगों को दंड देने में धीमा था जो सत्य से अनजान थे। परंतु मसीह के बलिदान ने सत्य की घोषणा इस प्रकार की जिसने अनभिज्ञता को कम क्षमायोग्य बना दिया। फलस्वरूप, परमेश्वर पापियों पर अधिक तेजी और गंभीरता के साथ दंड लाने लगा जब वे सुसमाचार के प्रचार को सुनकर पश्चाताप करने में असफल हो जाते थे।

> कुछ संदेहवादी यीशु की मृत्यु को पथभ्रष्ट जीवन के दुखदाई अंत से अधिक नहीं समझते। परंतु विश्वासियों के लिए, मसीह की मृत्यु सुविचारित, और महत्वपूर्ण और छुटकारा देने वाली थी। और क्रूस के रहस्यमय पहलुओं को हम कैसे समझते हैं, इसके एक भाग के रूप में यह पुराने नियम के बलिदान के प्रतीक या पूर्ववर्ती उद्देश्य की पूर्णता है। अब एक बार फिर से आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो लहू की इस आवश्यकता के बारे में बहुत असुविधाजनक महसूस करते है। यह बहुत ही ज्यादा प्राचीन लगता है, यह अधिक ज्ञानवान लोगों और सभ्य लोगों को अस्वीकारयोग्य प्रतीत होता है। मैं सोचता हूँ कि हमारे लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर कोई ब्रह्मांडीय पिशाच नहीं है जिसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए लहू की आवश्यकता है। पुराने नियम के बलिदान, पुराने नियम की बलिदान प्रणाली, साहसी, नृशंस और स्फूर्तिकारक थी, यह सब पाप की गंभीरता को रेखांकित करने के लिए था जिसको यह संबोधित करती है। पुराने नियम की बलिदान प्रणाली प्राचीन लोगों को यह स्मरण दिलाने के लिए थी कि परमेश्वर के ब्रह्मांड की नैतिक समानता की पुनर्स्थापना के लिए पाप को संबोधित करना आवश्यक है, यदि आप चाहते हैं तो। और यीशु मसीह उस आवश्यकता की पूर्णता के लिए इस तरह से आता है कि परमेश्वर के न्याय की मांगें और ब्रह्मांड का नैतिक संतुलन आत्म-त्याग से भरे प्रेम के अद्वितीय कार्य के द्वारा पूर्ण हो जाता है। पुराना नियम मसीह की ओर इस प्रकार से संकेत करता है

> और उसमें पूरा हो जाता है कि उसमें प्राचीन बलिदान प्रणाली के सब विवरण भी पूरे हो जाते हैं।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

यह देखने के बाद कि कैसे यीशु ने याजकीय भूमिका के द्वारा नेतृत्व और धार्मिक कार्यों को पूरा किया, हमें अब यह देखना चाहिए कि उसने मध्यस्थता का संबंधित याजकीय कार्य कैसे पूरा किया।

मध्यस्थता

इस अध्याय में पहले हमने कहा था कि मध्यस्थता किसी दूसरे पर कृपा होने के लिए बिचवई करना या प्रार्थना करना है। यह वह बात है जो कि यीशु की पृथ्वी की सेवकाई में दिखाई देती है, और यह स्वर्ग में उसकी सेवकाई में भी निरंतर दिखाई देती है।

> मेरा एक मित्र है जिसने मुझसे यह पूछा, “यदि यीशु हमें परमेश्वर तक ले जाता है, तो हमें अब भी यीशु की आवश्यकता क्यों है? क्यों न हम अब यीशु को हटा दें क्योंकि उसने हमें पिता तक पहुँचा दिया है, और केवल पिता से ही प्रार्थना करें? हमें अब यीशु की आवश्यकता और नहीं है।” इससे यीशु की निरंतर चलने वाली भूमिका को हम खो देते हैं। क्येंकि नया नियम यह कहता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच यीशु ही एकमात्र मध्यस्थ है जो कि वर्तमान में हैं और वह हमारे लिए मध्यस्थता करने हेतु अनन्तकाल तक जीवित है। इसका यह अर्थ नहीं है कि यीशु का क्रूस पर किया गया प्रायश्चित का कार्य किसी भी तरह से अपर्याप्त है। आश्वस्त रहें कि यीशु का प्रायश्चित का कार्य सबके लिए एक बार में पूरा हो गया था, यह पूरा हो चुका है; इसमें और कुछ भी जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। परंतु यीशु के पास अभी भी निरंतर चलने वाली, व्यक्तिगत, संबंधात्मक भूमिका है जिसे वह हमारे जीवन में हमारे अधिवक्ता, हमारे मध्यस्थ, हमारे प्रतिनिधि के रूप में निभाता है। वह हमारा अधिवक्ता है जो प्रतिदिन, निरंतर महान न्यायी के पास जाता है और हमारे विषय में याचना करता है। अच्छा समाचार यह है कि उसके प्रायश्चित के कार्य के कारण वह किसी भी मुकद्दमें को हारता नहीं है। हमारे महान महायाजक के रूप में हमारे लिए निभाई जाने वाली अपनी मध्यस्थ की भूमिका में वह सदैव अपने सिद्ध और पूर्ण किए कार्य के प्रति अपील करता है, और यह हमेशा सफल होती है, यह हमेशा प्रभावशाली होती है। परंतु यह निरंतर चलने वाला, और संबंधात्मक और गतिशील कार्य है। और इस प्रकार यीशु, अपने पूर्ण किए प्रायश्चित के कार्य के आधार पर, हमारे महान महायाजक के रूप में निरंतर हमारा बिचवई, और हमारा मध्यस्थ बना रहता है।
>
> — डॉ. के ऐरिक थोनेस

बाइबल में यीशु के मध्यस्थता के कार्य का एक सबसे स्पष्ट उदाहरण उस रात को अपने चेलों के लिए प्रार्थना करना था जिस रात वह पकड़वाया गया और उस पर मुकद्दमा चला जिसका वर्णन यूहन्ना 17 में है। वास्तव में, इस प्रार्थना को विशेष तौर पर "महायाजकीय प्रार्थना" कहा जाता है। इस प्रार्थना में यीशु ने प्रेरितों के लिए बहुत सी याचनाएँ कीं। और यूहन्ना 17:20-21 में उसने उन लोगों के लिए भी प्रार्थना की जो उनकी सुसमाचारिक सेवकाई के द्वारा उसके चेले बनेंगे।

यीशु ने क्रूस की मृत्यु में भी मध्यस्थता के अपने कार्य को जारी रखा, जहाँ उसने सबसे प्रभावशाली रूप में परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थता की। और अब जबकि उसका स्वर्गारोहण हो गया है, तो हमें बताया गया है कि वह स्वर्गीय मंदिर में वेदी पर अपने स्वयं के लहू को प्रस्तुत करने और हमारे लिए पिता के समक्ष याचना करने के द्वारा निरंतर हमारे लिए मध्यस्थता करता है। जैसा कि हम इब्रानियों 7:24-25 में पढ़ते हैं :

> वह युगानुयुग रहता है, इस कारण उसका याजक पद अटल है। इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है। (इब्रानियों 7:24-25)

हमारा उद्धार इसलिए स्थाई है क्योंकि हमारा महान महायाजक यीशु हमारे बदले में निरंतर विनती कर रहा है, और पिता से प्रार्थना कर रहा है कि वह हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक पाप के लिए उसकी कीमत के रूप में पुत्र की मृत्यु की योग्यता को स्वीकार कर ले।

यीशु ने पुराने नियम के याजकपन के कार्य को सिद्धता से पूरा किया। उसने अगुवाई प्रदान की, धार्मिक क्रियाओं को किया - जिसमें अब तक की सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक क्रिया शामिल है, अर्थात् क्रूस का बलिदान - और उसने अपने लोगों के लिए मध्यस्थता की। वास्तव में, वह आज भी इन आधारभूत कार्यों को अपनी कलीसिया और स्वर्गीय न्यायालय में अपने महायाजकीय कार्य के द्वारा निरंतर करता रहता है। अतः उसके अनुयायी होने के नाते पिता के समक्ष हमारी एकमात्र पहुँच के रूप में हमारा दायित्व है कि हम यीशु को हमारे अपने जीवनों में मानें और उस पर निर्भर रहें, और उसकी सेवकाई के प्रति समर्पित रहें, जब वह परमेश्वर की विशेष पवित्र उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए हमें तैयार करता है।

याजक के रूप में यीशु की योग्यता और उसके कार्यों को ध्यान में रखते हुए, आइए देखें कि कैसे उसने याजकीय कार्य के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा किया।

अपेक्षाएँ

जैसा कि हमने पहले इस अध्याय में देखा, याजकपन के कार्यभार के ऐतिहासिक विकास ने इस अपेक्षा को उत्पन्न कर दिया कि भविष्य में याजकपन का कार्यभार परमेश्वर और उसके लोगों के बीच निरंतर मध्यस्थता करता रहेगा ताकि लोग परमेश्वर की विशेष, पवित्र उपस्थिति में स्वीकार किए जा सकें। और हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु ने याजकपन के कार्यभार के कार्यों को करने के द्वारा इन सारी अपेक्षाओं को पूरा कर दिया था। अतः हमारे अध्याय के इस भाग में हम अपने ध्यान को इस बात पर लगाएँगे कि यीशु ने याजकपन के कार्यभार के भविष्य के विषय में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को कैसे पूरा किया।

हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। पहला, हम महायाजक के संबंध में की गई भविष्यद्वाणी को देखेंगे। दूसरा, हम इस महान महायाजक के बारे में की गई भविष्यद्वाणी को देखेंगे जो हमारे राजा के रूप में सेवा कर रहा है। और तीसरा, हम उस भविष्यद्वाणी को देखेंगे कि परमेश्वर के लोग याजकों का समाज बन जाएँगे। आइए इस बात से देखना आरंभ करें कि यीशु ने कैसे महान महायाजक की भविष्यद्वाणी को पूरा किया।

महान महायाजक

विभिन्न रूपों में, कई बार स्पष्ट तौर पर पुराने नियम ने पहले से ही बता दिया है कि भविष्य में एक महान महायाजक होगा जो मसीहा-संबंधी युग का सूत्रपात्र करेगा, और जो वास्तव में स्वयं मसीहा होगा। भजन 110 के अनुसार यह महायाजक “मलिकिसिदक की रीति” पर होगा, अर्थात् वह हारून के वंश से

नहीं होगा। वह इस कार्यभार में सदाकाल के लिए सेवा करेगा, अर्थात् मृत्यु उसको उसके कार्य को पूरा करने से रोक नहीं पाएगी। और इब्रानियों के लेखक के अनुसार, ये सारी भविष्यद्वाणियाँ यीशु में आकर पूरी हुईं।

इब्रानियों 7:21-22, भजन 110:4 को उदधृत करता है और इस पर इस प्रकार से अपनी टिप्पणी देता है :

> प्रभु ने शपथ खाई, और वह उस से फिर न पछताएगा, "तू युगानुयुग याजक है।" सो यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा। (इब्रानियों 7:21-22)

इब्रानियों के लेखक ने कहा कि जब परमेश्वर ने शपथ खाई की मसीह युगानुयुग लिए याजक होगा, तो उसने यह सुनिश्चित किया कि भविष्य में आने वाला महान महायाजक मसीह होगा जो नई वाचा को लेकर आएगा। इब्रानियों के इसी अनुच्छेद के अनुसार, यीशु ही महान महायाजक है।

वास्तव में, इब्रानियों की पत्री यीशु की भूमिका को महान महायाजक के रूप में कम से कम दस बार विभिन्न स्थानों पर भविष्यद्वाणी किया हुआ उल्लिखित करती है। यह यीशु को निरंतर "मसीह" या "मसीहा" के रूप में दर्शाती है, और यह अध्याय 8, 9 और 12 में स्पष्ट रूप से कहती है कि यही वह है जो नई वाचा को लेकर आता है। नए नियम की अन्य किसी भी पुस्तक से बढ़कर, इब्रानियों की पत्री निःसंदेह यह प्रमाणित करती है कि यीशु पुराने नियम की महान महायाजक की अपेक्षा को पूरी करता है।

पुराने नियम की दूसरी अपेक्षा जिसे यीशु ने महान महायाजक के रूप में पूरा किया वह यह है कि वह राजा के रूप में शासन करेगा।

राजा के रूप में याजक

हम देख चुके हैं कि आदम के समय से लेकर अब्राहम के समय तक याजक और राजा के कार्यभार अक्सर एक ही व्यक्ति में पाए जाते थे। और यद्यपि वे इस्राएल के राजतंत्र के समय में विभाजित थे, परंतु पुराने नियम ने यह भविष्यद्वाणी की कि वे अंततः मसीहा के व्यक्तित्व में फिर से एक साथ मिला दिए जाएँगे। यह बात भजन 110:2-4 और जकर्याह 6:13 दोनों में दर्शाई गई है।

और जैसा कि हमने इस बात को इस और पहले के अध्यायों में देख चुके हैं, जब यीशु मसीहा के रूप में आया, तो उसने राजा और महायाजक दोनों के कार्यभारों को अपने ऊपर ले लिया। इस बात को मरकुस 8:29; लूका 23:3 और इब्रानियों 8-9 जैसे अनुच्छेदों में दर्शाया गया है।

यीशु के आने से पहले, हारूनवंशी याजकपन ने लगभग 1000 वर्षों से अधिक समय तक परमेश्वर के लोगों की सेवा की। परंतु उनकी सेवकाई ने सदैव अपने से परे एक आने वाले मसीहा की ओर संकेत किया जो राजा और याजक दोनों होगा। और वास्तव में, प्रेरितों के काम 6:7 के अनुसार यरूशलेम और इस्राएल के बहुत से याजकों ने यीशु को मसीहा के रूप में पहचाना और उसके अनुयायी बन गए।

क्योंकि यीशु ने न तो स्वतंत्र याजकपन को स्थापित किया और न ही मंदिर और हारुनवंशी याजकपन की अटल सेवकाई की पुष्टि की, इसलिए जो समर्थन उसने इस्राएल से प्राप्त किया वह संकेत करता है कि इन याजकों ने पुराने नियम की शिक्षा को समझ लिया था कि जब मसीहा आएगा, तो वह अपने व्यक्तित्व में राजा और याजक दोनों के कार्यभारों को फिर से मिला देगा। और जैसा कि हम देख चुके है, यीशु ने ठीक ऐसा ही किया।

तीसरी विशेष तौर पर की गई भविष्यद्वाणीय अपेक्षा जिसे यीशु के याजकपन ने पूरा किया, वह यह थी कि महान महायाजक परमेश्वर के लोगों की अगुवाई को याजकों का समाज बनने में करेगा।

याजकों का समाज

हम पहले ही देख चुके हैं कि निर्गमन 19:6 और यशायाह 61:6 दोनों एक ऐसे समय के विषय में भविष्यद्वाणी करते हैं जब परमेश्वर के लोग याजकों का राज्य या समाज बन जाएँगे। वे सब उन्हें सौंपे गए कार्य के द्वारा, अर्थात् स्तुति और आज्ञाकारिता के बलिदानों को चढ़ाने और अन्य याजकीय कार्यों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में सेवा करेंगे। और महत्वपूर्ण रूप से, लूका 4 में दर्ज यीशु के संदेश में प्रभु ने यशायाह 61 से उदधृत किया और इसका उसमें पूरे होने का दावा किया। इस प्रकार, यीशु ने दर्शाया कि वह स्वयं परमेश्वर के लोगों को याजकों के समाज में परिवर्तित कर देगा। और नए नियम के अन्य भागों के अनुसार, उसने बिल्कुल ऐसा ही किया।

उदाहरण के लिए, 1 पतरस 2:5 में पतरस ने कलीसिया को “याजकों का पवित्र समाज” कहा है। और पद 9 में उसने उन्हें “राज-पदधारी’ कहा है। और इसी विचार को हम प्रकाशितवाक्य 1:6, 5:10 और 20:6 में भी पाते हैं।

एक उदाहरण के रूप में, प्रकाशितवाक्य 1:6 से यीशु के विषय में इन वचनों को सुनिए :

> [उसने] हमें एक राज्य और पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया।
> (प्रकाशितवाक्य 1:6)

मसीह होने के रूप में, यीशु महान महायाजक है जो एक राजा के रूप में राज्य करता है, और जो अपने सारे अनुयायियों को अपने राज्य में याजकों के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त करता है।

> एक बात जो हम पुराने नियम से सीखते हैं वह यह है कि मुख्य धार्मिक लोग याजक थे। हम नए नियम में पाते हैं कि कुछ मसीही लोग ही नहीं, बल्कि सब विश्वासी अब याजक हैं। यह सत्य अक्सर प्रसिद्ध वाक्य “सब विश्वासियों के याजकपन” में दर्शाया जाता है। जिस बात पर यहाँ बल दिया जा रहा है, वह यह है कि सब मसीहियों को बुलाहट और सामर्थ्य दी गई है कि वे सेवकाई करें, यीशु के हाथ, हृदय और पैर बनें, मसीह की देह बनें। अब यह एक अत्यंत सामर्थ प्रदान करने वाला सत्य है। इस अद्‌भुत सत्य को प्राप्त करने का एक ऐतिहासिक नाटकीय परिणाम यह है कि किसी को भी अब परमेश्वर और उनके बीच किसी मनुष्य को आवश्यक बिचवई या मध्यस्थ मानने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी संरचना जो आपके और परमेश्वर के बीच किसी बिचोलिए को खड़ा करती है, वह इसलिए करती है कि आपका दुरूपयोग कर सके, और सामाजिक रूप से आपको नियंत्रित और वश में कर सके। अतः यह एक अत्यधिक सशक्त बनाने, सम्मानित करने और छुटकारा देने वाला सत्य है, और इसके साथ-साथ, यह ऐसा सत्य भी है जो किसी भी तरह से इस सत्य को भी कम नहीं करता है कि परमेश्वर ने अपनी देह को विभिन्न तरह के वरदानों से भरा है, और यह कि इन वरदानों के बीच, जिसकी सराहना मैं उनमें करता हूँ जिन्होंने मेरे प्रति सेवकाई की है, वह है पासवानी वरदान। पासवानी वरदान के लिए एक विशेष हृदय की आवश्यकता होती है। इसमें चरवाही करने, अगुवाई करने, उत्साहित करने, और राहत देने के हृदय और कौशल की आवश्यकता होती है। यह किसी के और उनके परमेश्वर के बीच में खड़ा होना नहीं है। यह पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के उनके अधिकार को कम आंकना नहीं है जब परमेश्वर उनके मन को प्रकाशित करता है और वे अपने भले कार्यों को करते हैं और इस कार्य के लिए स्वयं को अनुशासित करते हैं। परंतु यह अनुग्रह है जो हमें दिया गया है कि वह हमारी उस यात्रा में सहायता

> करे जिसमें हममें से प्रत्येक एक याजक है, और इसमें से प्रत्येक याजक पासवानी देखभाल को महत्व देता है और बहुमूल्य जानता है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

यीशु द्वारा याजकपन को पूरा किये जाने का कार्य हमें कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात की याद दिलाता है। सृष्टि में परमेश्वर का वास्तविक उद्देश्य पाप के कारण जटिल हो गया है, परंतु पाप के कारण कभी पराजित नहीं हुआ। यीशु का अपना आगमन और याजकीय माँगों की सटीकता से पूर्णता परमेश्वर की योजना की भलाई के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता को दिखलाता है। इस कार्यभार का उसके द्वारा दृढ़ किया जाना और इसका परम अर्थ परमेश्वर की योजना के आगे बढ़ने में उसकी केंद्रीयता को दिखाता है। और एक महान महायाजक के नाते जो राजा के रूप में राज्य करता है, यीशु याजकीय सेवकाई के मूलभूत और अपेक्षित पहलूओं को पूरा करता है। इसलिए, उसके लोगों के रूप में, हमारे पास याजकों का समाज होने के नाते यीशु को आदर देने, उसकी आराधना करने और उस पर भरोसा करने के बहुत से कारण हैं।

अब तक, हमने याजक के कार्यभार के प्रति पुराने नियम की पृष्ठभूमि, और यीशु में उसकी पूर्णता को देखा है। इसलिए अब हम यीशु के याजकपन के आधुनिक उपयोग पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं। हमारे महान महायाजक के रूप में यीशु की भूमिका के आज हमारे जीवनों के लिए क्या आशय हैं?

आधुनिक उपयोग

मसीह के याजकीय कार्य के आधुनिक उपयोग का एक सबसे सुविधाजनक तरीका वेस्टमिंसटर लघु प्रश्नोत्तरी की उत्तर संख्या 25 में पाया जाता है, जो कहता है :

> मसीह याजक के कार्यभार का संचालन अपने स्वयं का बलिदान करने के द्वारा और हमारे लिए मध्यस्थ का कार्य करने के द्वारा करता है कि वह दिव्य न्याय को संतुष्ट करे और परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप कराए।

इस उत्तर में, प्रश्नोत्तरी विश्वासियों के प्रति उसकी सेवकाई के आधार पर मसीह के याजकीय कार्य को सारगर्भित करता है। और यह उसके कार्य के कम से कम तीन पहलूओं को उल्लिखित करता है। पहला, यह मसीह की आत्म-बलिदान की सेवकाई के बारे में बोलता है। दूसरा, यह कहता है कि उसकी सदैव के लिए एक बार किए गए बलिदान-संबंधी सेवकाई ने विश्वासियों और परमेश्वर के बीच मेलमिलाप को स्थापित किया। और तीसरा, यह विश्वासियों और परमेश्वर के बीच उसकी निरंतर मध्यस्थता को दर्शाता है।

यीशु के याजक के कार्यभार के आधुनिक उपयोग पर हमारा ध्यान वेस्टमिंसटर लघु प्रश्नोत्तरी द्वारा जोर दी गई बातों का अनुसरण करेगा। पहला, हम मसीह के बलिदान की ओर देखेंगे। दूसरा, हम उसके मेल-मिलाप के कार्य पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और तीसरा, हम मसीह की मध्यस्थता के लागू किए जाने पर ध्यान देंगे। आइए हम पहले बलिदान की ओर मुड़ें।

बलिदान

हम मसीह के बलिदान के उपयोग की जाँच ऐसे तीन प्रत्युत्तरों को देखने के द्वारा करेंगे, जो हमारे होने चाहिए : उद्धार के लिए उस पर भरोसा; उसके और उससे प्रेम करने वालों के प्रति विश्वासयोग्य सेवा; और आराधना। आइए हम पहले भरोसे के विषय को देखते हुए आरंभ करें।

भरोसा

पवित्रशास्त्र यह शिक्षा देता है कि यीशु का क्रूस का बलिदान ही परमेश्वर के उद्धार के वरदान का प्रभावशाली आधार है। मसीह पापियों को बचाने के लिए क्रूस पर मरा। इस अध्याय में पहले सीखी गई शब्दावली का प्रयोग करें तो उसने परमेश्वर को संतुष्ट कर दिया, अर्थात् उस पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के दोष को दूर करने के लिए परमेश्वर के न्याय और क्रोध को संतुष्ट कर दिया।

और वह विश्वास महत्वपूर्ण है। मसीह द्वारा दी जाने वाली पापों की क्षमा को प्राप्त करने के लिए, हमें उस पर और केवल उस पर भरोसा करना चाहिए। हमें विश्वास करना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है जो हमारे पापों के लिए मरा, और यह कि हम उसके द्वारा हमारे लिए किए गए बलिदान के कारण ही क्षमा किए गए हैं। पवित्रशास्त्र इस भरोसे के बारे में यूहन्ना 20:31, रोमियो 10:9-10 और 1 यूहन्ना 4:14-16 जैसे स्थानों में बात करता है।

मसीह के अनुयायियों को भरोसा रखना चाहिए कि हमारा उद्धार यीशु के बलिदान पर आधारित है, और यह केवल उसके कार्य के कारण ही प्रभावशाली है। और कोई भी हमें बचा नहीं सकता।

जैसा कि पतरस ने प्रेरितों 4:12 में प्रचार किया :

> और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें। (प्रेरितों 4:12)

हम उद्धार को कमा नहीं सकते। कोई कलीसिया या पवित्र जन हमें यह दे नहीं सकता। हमें केवल यीशु के गुणों और हमारे उद्धार के लिए उसके बलिदान पर ही भरोसा करना चाहिए।

जब हम अपना भरोसा केवल यीशु पर रखते हैं, तो हम परमेश्वर के समक्ष आत्मविश्वास और आनंद को रख सकते हैं। यीशु ने वह सब किया जिसकी आज्ञा पिता ने दी थी। और हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह विश्वासयोग्यता के साथ सब कुछ करेगा जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की है।

जैसा कि हम इब्रानियों 10:19-22 में पढ़ते हैं :

> हमें यीशु के लहू के द्वारा . . . पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है . . . इसलिए कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ, हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप जाएँ। (इब्रानियों 10:19-22)

जिस हियाव का उल्लेख यहाँ पर किया गया है, उसे भरोसा भी कहा जा सकता है। यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि यीशु का बलिदान हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए पर्याप्त है, और यह कि यह किसी भी तरह से हमारा उद्धार करने में असफल नहीं हो सकता।

> हमारा उद्धार हुआ है, इसका एक चिह्न यह है कि हमारे पास उद्धार पाने का एक भाव है। हमारे पास परमेश्वर के परिवार का भाग होने का भाव है। बाइबल कहती है कि पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। और इसलिए, परमेश्वर की सच्ची संतान होने के रूप में हमारे

पास उस लेपालकपन का भाव है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे उद्धार के विषय में जो निश्चितता या आश्वासन है उसमें उतार चढ़ाव नहीं हो सकता। हम उस आश्वासन में बढ़ना चाहते हैं, परंतु यह निश्चिततः समय-समय पर आ-जा सकता है। हमें सुसमाचार को समझने का प्रयास करने की, प्रतिदिन इसे स्वयं को प्रचार करने की आवश्यकता है, ताकि हम यह समझ सकें कि यीशु ने जब हमारे स्थान को लिया तो उसने हमारे लिए क्या किया, और एक दूसरे की सहायता करें। संगति में हम यही करते हैं, हम हमारे लेपालकपन, हमारे उद्धार, हमारी क्षमा को निश्चित करने के लिए एक दूसरे की सहायता करते हैं, कि पवित्र आत्मा इसे हमारे लिए सुविधाजनक बनाए जब हम वचन के प्रचार की अधीनता में बैठते हैं और मसीह में हियाव रखने में बढ़ते हैं और उसमें भी जो उसने हमारे लिए किया है। इसलिए, उद्धार का वह आश्वासन जो प्रत्येक विश्वासी में है वह दिन प्रतिदिन आता और जाता रहता है, परंतु सामान्य भाव में, समय के साथ-साथ इसमें निरंतर बढ़ोतरी होती रहनी चाहिए।

— डॉ. के. ऐरिक थोनेस

क्या सच्चे विश्वासी अपने उद्धार पर संदेह कर सकते हैं? बिल्कुल। और इसके उदाहरणों को पवित्रशास्त्र में देखा जा सकता है। मैं सोचता हूँ कि आप इसे एलिय्याह के झाऊ वृक्ष के नीचे बैठने के विषय में देखते हैं, आप दाऊद को उसके विलाप के भजनों में देखते हैं जिनमें वह परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में प्रश्न करता है। मैं सोचता हूँ कि आप इसे पतरस की जीवनी में देखते हैं, शायद इनकार करने की घटना के ठीक बाद, जब वह बाहर जाता है और रोता है। निश्चिततः सच्चे विश्वासी अपने उद्धार पर संदेह कर सकते हैं। आप जानते हैं कि हमारा उद्धार ऐसा नहीं है, “मैं अपने आश्वासन की मात्रा के अनुसार उद्धार पाता हूँ।” कई बार सुसमचारिक दायरे में, हम इस दिशा की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति रखते हैं। हम लोगों को गवाही देने के लिए कहते हैं - मेरे पास गवाही है; मेरा हृदय परिवर्तन पौलुस की तरह अचानक और नाटकीय ढ़ग से हुआ था। यदि आप मुझ पर दबाव डालेंगे तो मैं आपको एक घँटा और एक मिनट दे सकता हूँ। एक दिन था जब मैं नहीं मानता था कि यीशु का अस्तित्व है, और न ही मैं इसकी परवाह करता था, और 24 घंटों के भीतर, मैंने यह विश्वास किया कि वह परमेश्वर का पुत्र और मेरा उद्धारकर्ता है। परंतु मैंने केवल मसीह के पूर्ण किए कार्य और उसकी उपलब्धि पर विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाया है, न कि मेरे आश्वासन की मात्रा पर। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो आपसे आपके आश्वासन को छीन सकती हैं। अचानक से आई विपत्तियाँ, जब प्रभु उस स्त्री या पुरूष को आपसे ले ले जिससे आप इस संसार में सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं, यह आपको हिला सकता है। कई बार भौतिक, मनोवैज्ञानिक कारण भी हो सकते हैं। कुछ लोगों को केवल आधा भरा ग्लास देखने की आदत होती है। वे संवैधानिक रूप से प्रश्न पूछने वाले होते हैं। हम सब संसार के “हताश लोगों” को जानते हैं, और मैं सोचता हूँ कि मैं उनमें से एक हूँ, जो उस तरह के प्रश्न करता हूँ। वहाँ पर ऐसे कारण हैं, ईश्वरीय कारण हैं, उदाहरण के लिए वेस्टमिंस्टर अंगीकरण ने17 वीं शताब्दी में सुझाव दिया कि परमेश्वर कई बार अपने चेहरे के प्रकाश को हमसे हटा लेता है, हमसे इसलिए दूरी बना लेता है ताकि हम उसे और भी अधिक चाहें, और उसे याद करने का वह

> कार्य हमें बढ़ाता है और अंततः हमारे विश्वास को दृढ़ करता है। यह कभी भी सुहावना अनुभव नहीं होता। परंतु माता-पिता कई बार ऐसा करते हैं। वे अपने हाथों को अपने बच्चे से उस समय दूर कर लेते हैं जब वह चलना आरंभ करता है। वे वहीं होते हैं, उन्हें पकड़ने के लिए यदि वे गिर रहे होते हैं, परंतु कुछ पलों के लिए वे अपने सहारे पर होते हैं। और कुछ इसी तरह से परमेश्वर हमारे साथ करता है, उसके लिए हममें लालसा उत्पन्न करता है और इसके परिणामस्वरूप हममें बढ़ोतरी करता है।
>
> — डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थॉमस

अब जबकि हमने मसीह के बलिदान के प्रति प्रत्युत्तर के रूप में भरोसे पर ध्यान दे दिया है, इसलिए आइए उस सेवा की ओर मुड़ें जिसके लिए उसके बलिदान को हमें प्रेरित करना चाहिए।

सेवा

बाइबल यह शिक्षा देती है कि यीशु का हमारे बदले में किया हुआ बलिदान हमें विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा करने को प्रेरित करना चाहिए। पूरे रोमियों 6 में पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि क्योंकि यीशु हमें बचाने के लिए मरा, इसलिए यह हमारा दायित्व है कि हम उसे प्रेम करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। वह हमें नया जीवन देने के लिए मरा - ऐसा जीवन जो पाप की गुलामी से स्वतंत्र है। और इस उद्धार के लिए अपने धन्यवाद को व्यक्त करने का एक तरीका यह है कि हम अपने जीवनों में पाप के विरूद्ध लड़ें, और इसके प्रति फिर से समर्पित होने से इनकार कर दें।

जैसा कि पौलुस ने रोमियों 6:2-4 में लिखा :

> हम जब पाप के लिए मर गये तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएँ? . . . सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। (रोमियों 6:2-4)

यीशु हमारे बदले में मरा ताकि हम पाप की गुलामी से स्वतंत्र हो सकें। और उस बलिदान के प्रति एकमात्र उचित प्रतिक्रिया यह है कि हम ऐसा जीवन जीएँ जो उसे प्रसन्न करे।

पवित्रशास्त्र कई अन्य तरीकों का भी उल्लेख करता है जिनमें हम उसके बलिदान के प्रकाश में मसीह की सेवा कर सकते हैं। स्पष्ट तौर पर, हमें दुःख उठाने और यहाँ तक कि उसके उद्देश्यों के लिए मरने के लिए तैयार रहने के द्वारा मसीह के नमूने का अनुसरण करना चाहिए। वास्तव में, प्रेरितों के काम 5:41 और फिलिप्पियों 1:29 जैसे अनुच्छेद संकेत करते हैं कि जब हम मसीह के कारण दुःख उठाते हैं तो यह बड़े सम्मान और आशीष की बात होती है।

और बाइबल भी हमें उत्साहित करती है कि हम उन्हीं लोगों के लिए स्वयं का बलिदान करने के द्वारा मसीह की सेवा करें जिनको बचाने के लिए यीशु मरा। यह हमें इफिसियों 4:32-5:2 में एक दूसरे के साथ धीरज धरने और करूणा करने की शिक्षा देती है। यह रोमियों 14 और 1 कुरिन्थियों 8 में उन लोगों के लिए अपनी स्वतंत्रता को त्याग देने का निर्देश देती है जो विश्वास में कमजोर हैं। और यह हमें मसीह के समान अन्य विश्वासियों के लिए हमारे जीवनों को न्यौछावर करने की आज्ञा भी देती है। जैसा कि यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:16 में लिखा है :

> हमने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए, और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। (1 यूहन्ना 3:16)

यीशु का सदैव के लिए एक ही बार में क्रूस पर किया गया प्रायश्चित का बलिदान इसके नियत उद्देश्यों के लिए पूरी तरह से पर्याप्त था, अर्थात्, पापों के लिए परमेश्वर के धर्मी दंड को अपने ऊपर लेना। हम अपने लिए कभी प्रायश्चित का बलिदान नहीं कर सकते थे, दूसरों की तो बात ही छोड़ो। परंतु हम दूसरों के लिए अपने जीवनों को त्याग देने के यीशु के नूमने का अनुसरण कर सकते हैं।

और यदि हम उनके लिए मरने को तैयार हो जाएँ, तो हम उनके लिए छोटे-मोटे बलिदानों को तो अवश्य करेंगे, जैसे उनकी सेवा करने के लिए अपने समय को निकालना, अपने पैसे खर्च करना, अपने आराम को त्यागना, और हमारी अपनी धन संपत्ति को दे देना।

दूसरों से प्रेम करना, और उनके लिए त्याग करना कितना महत्वपूर्ण है इसके बारे में बात करना आसान है। परंतु कई बार इन बातों को पूरा करना हमारे लिए कठिन होता है। लोगों से अच्छी रीति से प्रेम करने के लिए हमें अक्सर उन चीजों का बलिदान करना होता है जो हमें बहुत प्रिय होती हैं - जैसे हमारा समय, हमारा धन, और हमारे आराम को। यह त्यागने योग्य कुछ बातें हैं जो दूसरों से प्रेम करने के लिए जरूरी होती हैं। हमारे लिए हमारे आराम की बातों से बढ़कर परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को महत्वपूर्ण मानना बहुत कठिन लगता है। परंतु जब हम उन्हें महत्व नहीं देते, तो हम एक महत्वपूर्ण सच्चाई से चूक जाते हैं : हम इन बलिदानों को चढ़ाने में इन बलिदानों की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। हम जिस तरह से अपने जीवनों को दूसरों के लिए त्यागते हैं उसके द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के अवसर को पाते हैं और इस संसार में उसके राज्य के विस्तार को देखते हैं।

अब जबकि हमने मसीह के बलिदान के दो आधुनिक उपयोगों के रूप में भरोसे और सेवा को देख लिया है, इसलिए आइए हम अपने ध्यान को आराधना की ओर मोड़ें।

आराधना

मसीहियों के रूप में, जब हम क्रूस पर किए यीशु के कार्य के बारे में सोचते हैं तो हम अक्सर स्वयं को यीशु की आराधना के लिए प्रेरित होता पाते हैं। उसका निःस्वार्थ बलिदान हमारे हृदयों को उसके महान प्रेम के लिए जो उसने हमें दिखाया है, उसकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है। और यह हमें उस उद्धार की अविश्वसनीय आशीषों के लिए बार-बार उसका धन्यवाद करने को प्रेरित करता है जिसका उसने हमारे लिए मूल्य चुकाया है।

और यीशु का बलिदान हमें पिता और आत्मा की आराधना करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। आखिरकार, यूहन्ना 14:31 जैसे अनुच्छेदों के अनुसार, यीशु का बलिदान पिता की योजना था। थी। और इब्रानियों 9:14 हमें शिक्षा देता है कि यीशु ने अपना बलिदान पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा चढ़ाया। इसलिए पिता और आत्मा उसी स्तुति और आराधना के योग्य हैं जो हम यीशु को देते हैं।

और आराधना के लिए हमें प्रेरित करने के अतिरिक्त, यीशु का बलिदान आराधना के एक नमूने का कार्य भी करता है। सुनिए पौलुस ने रोमियों 12:1 में क्या लिखा है :

> इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ - यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। (रोमियों 12:1)

यह अनुच्छेद स्वाभाविक तौर पर दो प्रश्नों को उत्पन्न करता है। पहला, यीशु की क्रूस पर मृत्यु किस प्रकार आराधना का एक कार्य है? और दूसरा, हम अपनी आराधना को इस पद्धति पर किस प्रकार ढाल सकते हैं?

पहले प्रश्न के उत्तर में, क्रूस पर यीशु की मृत्यु आराधना का एक कार्य था क्योंकि इसने पुराने नियम के प्रतीकों और पूर्वाभासों को पूरा किया जिन्हें पुराने नियम के बलिदानों के द्वारा स्थापित किया गया था। पुराने नियम में, परमेश्वर की आराधना बलिदान के चारों ओर केंद्रित थी। और इब्रानियों 9 हमें

सिखाता है कि यीशु का बलिदान वह तत्व था जिसकी ओर पुराने नियम के इन बलिदानों ने संकेत किया। यह इस बात को भी कहता है कि यीशु निष्क्रिय रूप में हमारे लिए बलिदान नहीं किया गया था। बल्कि, उसने सक्रिय रूप से स्वयं को बलिदान किया। वो वह ऐसा महायाजक था जिसने पुरानी वाचा की आराधना के नियमों का पालन किया, और स्वयं को बलिदान-संबंधी आराधना के एक कार्य के रूप में परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत किया। और इसी कारणवश हमारे बलिदान-संबंधी कार्य भी आराधना को स्थापित करते हैं।

परंतु हम किस प्रकार हमारी अपनी आराधना को यीशु के बलिदान की पद्धति के अनुसार ढाल सकते हैं? किस प्रकार के बलिदान-संबंधी कार्य हमें करने चाहिए? पवित्रशास्त्र ऐसे कई कार्यों की ओर संकेत करता है जिन्हें हम कर सकते हैं और परमेश्वर उन्हें बलिदान के रूप में गिनता है। जैसे कि हम पहले ही देख चुके हैं, रोमियों 12:1 कहता है कि मसीह के बलिदान का अनुसरण करने का एक तरीका हमारे शरीरों को परमेश्वर को अर्पित कर देना है। परंतु पद 2 इसके अर्थ को स्पष्ट करता है : हमें स्वयं को संसार के व्यवहार के सदृश्य नहीं बनाना है; बल्कि मसीह में हमारे नए मनों को अनुमति देनी है कि वे नए चाल-चलन में हमारी अगुवाई करें। हमें हमारे अपने शरीरों के पापपूर्ण प्रयोग से दूर रहना है, और ऐसे नए तरीकों में व्यवहार करना है जो परमेश्वर को सम्मान दें।

इफिसियों 5:1-2 हमें एक दूसरा तरीका सिखाता है जिसमें हम प्रेमपूर्ण जीवन को जीने के द्वारा मसीह के बलिदान का अनुसरण कर सकते हैं। क्रूस पर यीशु की मृत्यु प्रेम का परम या संपूर्ण कार्य थी। इसलिए जब हम एक दूसरे के लिए दयालु और तरस से भरे होते हैं, तो हम अपने जीवनों को मसीह के प्रेमपूर्ण बलिदान के अनुसार ढालते हैं।

और फिलिप्पियों 4:18 एक तीसरे तरीके के बारे में सुझाव देता है जिसमें हम बलिदान के द्वारा परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं : दूसरे विश्वासियों की सहायता करने में अपने धन, स्रोतों, और समय को देने के द्वारा। पौलुस ने कहा कि फिलिप्पियों के द्वारा उसे दी गई भेंटें परमेश्वर के प्रति बलिदान और भेंटें थीं क्योंकि वे फिलिप्पियों के लिए महँगी थीं और क्योंकि इससे उनको लाभ हुआ जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है।

अब, निःसंदेह ये सुझाव बलिदान के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने की संभावना की संपूर्णता को नहीं दर्शाते हैं। परंतु वे हमारे लिए एक अच्छी शुरुआत हैं जब हम प्रेमपूर्ण बलिदान के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के मसीह के पदचिन्हों का अनुसरण करते हैं।

अब जबकि हमने कुछ ऐसे तरीकों को देख लिया है कि हमें यीशु के बलिदान से व्यावहारिक उपयोगों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि कैसे उसके याजकीय मेल-मिलाप को हमारे जीवनों को प्रभावित करना चाहिए।

मेल-मिलाप

हम यीशु के याजकीय मेल-मिलाप के कार्य के आधुनिक उपयोग को तीन तरीकों में देखेंगे। सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि यह हमारा परमेश्वर के साथ मेल कराता है। दूसरा, हम उस एकता की ओर देखेंगे जिसे यह प्रोत्साहित करता है। और तीसरा, हम उस मिशन पर ध्यान देंगे जो यह हमें सौंपता है। आइए सबसे पहले हम परमेश्वर के साथ हमारे मेल को देखें।

मेल

जब यीशु परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप कराता है, तो वह हमारे और परमेश्वर के बीच मेल को स्थापित करता है। इस मेल-मिलाप से पहले, परमेश्वर के विरूद्ध हमारे विद्रोह ने हमें उसका शत्रु बना दिया था, जैसा कि हम रोमियों 5:10 और इफिसियों 2:2 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं। उस समय, हम परमेश्वर

के दंड और प्रकोप के योग्य थे। परंतु परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप कराने के द्वारा, यीशु ने इस शत्रुता का अंत कर दिया। उसने परमेश्वर के प्रकोप को शांत कर दिया, और हमारे बीच मेल को स्थापित किया।

अब परमेश्वर के शत्रु होने की अपेक्षा, हम वह संतान हैं जिनसे वह प्रेम करता है, और उसके राज्य के विश्वासयोग्य नागरिक हैं। और इसका अर्थ यह है कि हमें कभी परमेश्वर से वैसे डरने की आवश्यकता नहीं है जैसे हम शत्रुओं से डरते हैं। हमें कभी यह सोचने की आवश्यकता नहीं है कि वह हमें नाश करना चाहता है। हमारे जीवन मसीह में छिपे हैं, जिससे वही मेल जो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच में है, वही हमारे और परमेश्वर के बीच में है। और इस प्रकार का मेल हमारे हृदयों को स्तुति के लिए, हमारे हाथों को कार्य के लिए, और हमारे मनों को हमारे महान परमेश्वर के बारे में अधिक से अधिक जानने को प्रेरित करे।

सुनिए कुलिस्सियों 1:19-22 में पौलुस ने इसके बारे में कैसे बात की है :

> क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि [यीशु में] सारी परिपूर्णता वास करे, और उस के क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले . . . । तुम जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे; उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे। (कुलिस्सियों 1:19-22)

> "परमेश्वर के साथ हमारा मेल है," यह प्रश्न बहुत ही स्पष्ट है। तो फिर उसकी संतान, अर्थात् विश्वासियों को कष्ट क्यों सहना पड़ता है? मैं सोचता हूँ कि इसका सरल उत्तर यह है कि क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। परमेश्वर के साथ मेल होने का अर्थ यह है कि हम उसके साथ संबंध में वापस लाए जाते हैं। हमारी रचना इसलिए की गई थी कि हम परमेश्वर को जानें, उसकी सेवा करें, उससे प्रेम करें, उसकी आज्ञा का पालन करें, और उसे घनिष्ठता से जानें। और हमारे पाप हमें इन सबसे दूर कर देते हैं। उद्धार हमें वापस लेकर आता है - मेल, मेल-मिलाप, अन्य चित्रण हैं जो दर्शाते हैं कि उद्धार क्या है - ताकि हम उसके साथ अब एक संबंध में रहें। जब हम पाप करते हैं, तो वह हमसे इतना प्रेम करता है कि हमें अपने ही मार्गों में जाने नहीं देता। वह हमें वापस खींच लेता है। वह हमें अनुशासित करता है। मेरा अर्थ है कि जिस रूपक का पवित्रशास्त्र में प्रयोग किया गया है वह माता पिता और बच्चे का है। इस प्रकार अपने बच्चों की न तो मुझे चिंता होगी और न ही उनसे प्रेम होगा यदि मैं उनको ऐसे कार्य करने दूँ, जो उनको चोट पहुंचाएँ, या ऐसे कार्य करने दूँ जो उन्हें उन कार्यों को करने से दूर करें जिनकी आज्ञा मैंने उन्हें दी है। हमारा पिता जो स्वर्ग में है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें ताड़ना देता है ताकि हम मसीह के स्वरूप में ढल जाएँ। यह हमारी भलाई के लिए है। इसलिए यदि हम परमेश्वर की ताड़ना का अनुभव नहीं करते, तो यह हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए। अनुशासन या ताड़ना कोई बुरी बात नहीं है; यह एक अच्छी बात है, और अपनी संतान के लिए परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

जो मेल हमारा परमेश्वर के साथ है वह हमें प्रेरित करे कि हम हमारे अपने प्रति परमेश्वर की महान करुणा के कारण उसका प्रचार करने और उसका धन्यवाद करने के द्वारा परमेश्वर की स्तुति करें। यह हमें

प्रेरित करे कि हम प्रर्थना प्रार्थना में और परमेश्वर के लिए और परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में शब्दों को कहें। यह हमें उत्साहित करे की हम उन बड़े-बड़े कार्यों पर मनन करें जो उसने हमारे जीवनों में किए हैं, ऐसे नए मार्गों पर विचार करें जिसमें हम उससे प्रेम करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। और यह हमें हमारे अपने चारों ओर के लोगों को यह याद दिलाने के द्वारा उत्साहित करने की लालसा दे कि विश्वासियों का परमेश्वर के साथ मेल हो चुका है और अविश्वासी भी उसे प्राप्त कर सकते हैं यदि उनका भी उसके साथ मेल-मिलाप हो जाता है।

परमेश्वर के साथ हमारा मेल हमारे हाथों को भी कार्य करने के लिए प्रेरित करे। हमें दूसरे लोगों के साथ भी मेल रखना चाहिए। हम परमेश्वर के मेलपूर्ण या शांतिमय राज्य की आशीषों को नैतिक और सामाजिक न्याय के रूप में, और जरुरतमंद लोगों की देखभाल में प्रदर्शित कर सकते हैं। और हमें उन लोगों को राहत और सांत्वना देनी चाहिए जिनके ह्रदय अपने जीवनों में शांति और आशीष की कमी के कारण टूटे हूए हुए हैं।

और जो मेल हमारा परमेश्वर के साथ है वह हमें इस बात में भी प्रेरित करे कि हम हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानें और समझें। उसका वचन हमें बताता है कि हम उसके विचारों के अनुसार सोचने के द्वारा हमारे मनों में परमेश्वर की विचारधारा के सदृश्य बन जाएँ। और उसकी पर्याप्तता में शांति के साथ विश्राम करें, इस बात की चिंता न करते हुए कि कहीं परमेश्वर हमें इस संसार में अकेला न छोड़ दे, बल्कि इस ज्ञान में दृढ़ रहते हुए कि वह हमसे प्रेम करता है और हमारी देखभाल करता है।

यीशु की मेल-मिलाप की याजकीय सेवकाई का हमारे जीवनों में लागू होने का दूसरा तरीका परमेश्वर के लोगों के बीच एकता के प्रकटीकरणों में है।

एकता

एक विषय जो निरंतर नए नियम में प्रकट होता है वह यह कि जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे उन लोगों से भी प्रेम करेंगे जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है। जैसा कि हम 1 यूहन्ना 4:21 में पढ़ते हैं :

> जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई से भी प्रेम रखे। (1 यूहन्ना 4:21)

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति के साथ मेल कर लेता है, तो हमें भी उस व्यक्ति के साथ मेल कर लेना चाहिए।

इसी कारण प्रेरित पौलुस ने अपने पाठकों से यह आग्रह किया कि वे मेल-मिलाप के इस उत्तम वरदान को पहचानें जिसे उन्होंने परमेश्वर से प्राप्त किया था, और अन्य विश्वासियों के साथ इसे एकता में व्यक्त करें। आरंभिक कलीसिया में, उसने अक्सर इस विचार को कलीसिया में यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच तनावपूर्ण संबंधों में लागू किया।

सुनिए इफिसियों 2:13-16 में उसने क्या कहा :

> पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो . . . कि (यहूदियों और गैरयहूदियों) से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे, और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। (इफिसियों 2:13-16)

हम एकता पर इसी तरह के महत्व को यूहन्ना 17:23, रोमियों 15:5, और इफिसियों 4:3-13 जैसे स्थानों में पाते हैं।

आधुनिक कलीसिया यहूदियों और अन्यजातियों के बीच सही संबंधों के इस विशेष मुद्दे का सामना यदा-कदा ही करती है। परंतु हमारे पास इससे मिलती-जुलती बहुत सी समस्याएँ हैं। हम विश्वासियों में जातिवाद, क्षेत्रवाद, और राष्ट्रीय विद्वेष जैसे विषयों के साथ संघर्ष करते हैं। और यीशु की मेल-मिलाप की सेवकाई इन क्षेत्रों में एकता को लाने में हमारी सहायता कर सकती है। मसीह के साथ हमारे संयोजन के द्वारा हम सबका परमेश्वर और एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप हो चुका है। और कलीसिया में हमारे संबंधों में यह एकता व्यक्त होनी चाहिए। यह हमें अच्छी लगनी चाहिए और एकीकृत कलीसिया के परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करने में प्रेरित करनी चाहिए, चाहे इसमें हमें कई बार उन बातों को त्यागना भी पड़े जो हमें दूसरों से भिन्न बनती हैं।

मेल और एकता के साथ-साथ, मसीह की मेल-मिलाप की याजकीय सेवकाई से जो तीसरा उपयोग हम ले सकते हैं, वह है संसार में मेल-मिलाप की हमारी अपनी सेवकाई को पूरा करने का हमें दिया गया मिशन।

मिशन

यीशु की मेल-मिलाप की याजकीय सेवकाई अभी पूरी नहीं हुई है। उसके बलिदान ने मेल-मिलाप का मूल्य चुकाया और इसके प्रति आश्वस्त किया है। परंतु वह मेल-मिलाप अभी तक पूरे संसार पर लागू नहीं हुआ है। इसलिए इतिहास के इस चरण में, यीशु ने अपनी कलीसिया को नियुक्त किया है कि वह उसकी मेल-मिलाप की सेवकाई को आगे बढ़ाए। हम उसके मेल-मिलाप के राजदूत हैं। और यह हमारा कार्य है कि हम ऐसे सुसमाचार की घोषणा करें जो पापियों का परमेश्वर से मेल कराता है। सुनिए किस प्रकार पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:18-20 में हमारे मिशन का वर्णन किया है :

> परमेश्वर . . . ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। इसलिये, हम मसीह के राजदूत हैं, मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। (2 कुरिन्थियों 5:18-20)

परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का प्रस्ताव कलीसिया के लिए निरंतर एक महत्वपूर्ण सेवकाई बना हुआ है। पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा स्वयं से हमारा मेल-मिलाप कर लिया है, और वह पूरे संसार का स्वयं से लगातार मेल-मिलाप करा रहा है। और मसीह के अनुयायी होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि हम दूसरों के समक्ष भी इस संदेश की घोषणा करें, ताकि उनका भी उसके द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप हो सके। हम ऐसा प्राथमिक रूप से इस शुभ संदेश की घोषणा करने के द्वारा करते हैं कि मसीह के जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के माध्यम से पापियों का परमेश्वर के साथ मेल हो सकता है।

अब जबकि हमने बलिदान और मेल-मिलाप के आधार पर यीशु की याजकीय सेवकाई को देख लिया है, इसलिए हमें अब यीशु की याजकीय मध्यस्थता के आधुनिक उपयोग की ओर मुड़ना चाहिए।

मध्यस्थता

हम दो शीर्षकों के तहत यीशु की याजकीय मध्यस्थता के आधुनिक उपयोग की जाँच करेंगे। पहला, हम यह देखेंगे कि यह हमें स्वयं के लिए परमेश्वर से विनती करने में समर्थ बनाती है। और दूसरा,

हम देखेंगे कि मसीह की मध्यस्थता हमें दूसरों का समर्थन करने का दायित्व सौंपती है। आइए पहले यह देखें कि यह हमें अपनी आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर से विनती करने में किस प्रकार समर्थ बनाती है।

विनती करना

जैसा कि हम देख चुके हैं, यीशु परमेश्वर पिता को हमारे बदले किए गए अपने बलिदान का स्मरण दिलाने के द्वारा, और अपने बलिदान के आधार पर पिता से हमें क्षमा करने और आशीष देने की विनती करने के द्वारा हमारे लिए मध्यस्थता करता है। और क्योंकि पिता पुत्र को प्रेम करता और उसके बलिदान का मान रखता है, इसलिए वह हमारे लिए पुत्र के बलिदान के प्रति सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देता है। वह मसीह की याजकीय याचनाओं को सुनता और उत्तर देता है, ताकि उसकी क्षमा, पवित्रता, जीवन और उद्धार के लिए सारी आशीषें निरंतर हमारे ऊपर लागू हों।

और इसका एक उपयोग यह है कि हम प्रतिदिन हमारी आवश्यकताओं के लिए पिता के समक्ष जा सकते हैं, यह जानते हुए कि वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है क्योंकि हमारा महान महायाजक हमारे लिए प्रार्थना कर रहा है। हम इसे इफिसियों 3:12, इब्रानियों 10:19, और अन्य कई स्थानों में देखते हैं।

केवल एक उदाहरण के तौर पर इब्रानियों 4:14-16 को सुनिए :

> इसलिये जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे। (इब्रानियों 4:14-16)

जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने संकेत किया है, यीशु "स्वर्गों से होकर गया है।" अर्थात्, उसने स्वर्गीय पवित्रस्थान में अपने लहू के साथ प्रवेश किया है ताकि वह हमारे लिए मध्यस्थता करे। और उसकी मध्यस्थता के कारण, हमें दृढ़ विश्वास है कि परमेश्वर हम पर कृपा करता है, और वह हम पर दया और अनुग्रह करने के लिए तैयार रहता है जब हम उससे प्रार्थना करते हैं।

हम सब वस्तुओं के सृष्टिकर्ता के समक्ष हमारी सारी आवश्यकताओं के लिए विनती कर सकते हैं, भले ही वे क्षमा और उद्धार जैसी बड़ी आवश्यकताएँ हों, या फिर प्रतिदिन के भोजन, कपड़ों या घर की सामान्य प्रार्थनाएँ हों। कोई भी आवश्यकता इतनी छोटी नहीं है कि यह मसीह की हमारे बदले में की जाने वाली मध्यस्थता के दायरे से बाहर हो। और कोई भी आवश्यकता इतना इतनी बड़ी नहीं है कि वह उसके बलिदान में समा न सके। और इसी कारण, हमें अपनी प्रार्थनाओं में साहसी और दृढ़ बनने के प्रति उत्साहित होना चाहिए, जब हम अपनी सारी आवश्यकताओं और धार्मिक अभिलाषाओं के लिए हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता के समक्ष विनती करते हैं।

इस समझ के साथ कि कैसे मसीह की मध्यस्थता हमें स्वयं के लिए परमेश्वर के समक्ष विनती करने का अधिकार और दृढ़ विश्वास देती है, आइए अब हम यह देखें कि दूसरों का समर्थन करने के लिए यह कैसे हमें उत्साहित करती है।

समर्थन करना

> यीशु जब पहले से ही मध्यस्थता कर रहा है, तो हमें दूसरों के लिए प्रार्थना करने की क्या आवश्यकता है? मैं सोचता हूँ कि इसका मुख्य कारण दो शब्दों में है - मेरे "पीछे चलो"। यदि यीशु प्रार्थना कर रहा है, तो वह कहता है, मैं चाहता हूँ कि

> तुम मेरे पीछे चलो और मैं चाहता हूँ कि तुम भी मध्यस्थता करो। मैं भी मानता हूँ कि हमारी प्रार्थनाओं से प्रभाव पड़ता है। मैं यह भी मानता हूँ, और सोचता हूँ कि पवित्रशास्त्र सिखाता है कि न केवल उनसे प्रभाव पड़ता है, बल्कि ऐसे समय भी आ रहे हैं जब आप प्रार्थना नहीं करते हैं तो कुछ कार्य पूरे नहीं होते हैं क्योंकि आपने प्रार्थना नहीं की। इसलिए, क्या आप प्रार्थना में विश्वास करते है? हाँ। परंतु क्यों? क्योंकि यीशु ने कहा, "मेरे पीछे चलो," और उसने प्रार्थना की।
>
> — डॉ. मैट फ्रीडमैन

मसीह की स्वर्गीय मध्यस्थता का एक सबसे महत्वपूर्ण सबक यह है कि हमें प्रार्थना में दूसरों का समर्थन करने के द्वारा उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। दूसरों के लिए हमारे प्रेम और हमारी चिंता हमें प्रेरित करे कि हम उनके लिए परमेश्वर से बात करें, उससे विनती करें कि वह उनकी हर परिस्थिति में अपनी दया और अपने प्रेम को प्रकट करे।

सुनिए इफिसियों 6:18 में पौलुस ने क्या लिखा है :

> हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो। **(इफिसियों 6:18)**

यहाँ, पौलुस ने सारे विश्वासियों को निर्देश दिया कि वे दूसरों के लिए परमेश्वर के समक्ष आएँ। और निःसंदेह, जब कभी हम ऐसा करते हैं, तो हमारा समर्थन उनके बदले किए गए मसीह के बलिदान पर आधारित होता है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने हमारा समर्थन किया है।

> इसलिए जब मैं स्वयं से पूछता हूँ कि यीशु प्रार्थना क्यों करता है, वह मेरी आवश्कयताओं को जानता है, वह मेरी आवश्यकताओं को समझता है, तो उसे मेरे लिए मध्यस्थता करने की क्या आवश्यकता है? मध्यस्थता के आधार में कुछ ऐसा अवश्य है जो परमेश्वर के हृदय का उदाहरण है, और यह वही है जिसे वह रखता है, साथ लेकर चलता है। प्रभु के देहधारी जीवन में, त्रिएक जीवन में सहनशीलता है, प्रेम है जो मनुष्य की आवश्यकता को ले लेता है। यही क्रूस की बुनियाद है, मेरे यीशु के साथ चलने की बुनियाद है। और प्रभु इसलिए मुझसे एक आदेश के रूप में कहता है क्योंकि वह चाहता है कि मैं वास्तविकता को समझूँ, परंतु वह मुझे किसी दूसरे को मेरे हृदय में रखने का भी अवसर दे रहा है। यदि मैं इसे इस तरह से कहूँ, हरेक व्यक्ति की आवश्यकता का उत्तर किसी दूसरे में मिलता है। अब हमारी सारी आवश्यकताओं का उत्तर निःसंदेह यीशु के हृदय में मिलता है। परंतु हमें अपने स्वरूप में बनाते हुए और अपने शिष्य बनाने के लिए हमें बुलाते हुए, उसने ऐसा कहा है कि मैं चाहता हूँ कि तुम भी इसे रखो। मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस्राएली याजकों के समान याजक बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने हृदय में इसे हारून के समान रखो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे समान इस संसार की आवश्यकताओं को अपने हृदय में रखो। अतः मध्यस्थता परमेश्वर के हृदय की एक अभिव्यक्ति है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

समर्थन की मध्यस्थता वाली प्रार्थनाएँ जीवन के किसी भी पहलू पर लागू की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों 15:30; इफिसियों 6:20; कुलुस्सियों 4:4; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25 और इब्रानियों 13:19 जैसे स्थानों में हमें मसीही सेवकाईयों की सफलता के लिए प्रार्थना करने को उत्साहित किया गया है।

हमें सिखाया गया है कि हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो आत्मिक खतरे या पाप में हैं, जैसा कि हम 1 यूहन्ना 5:16 में देखते हैं। हमें मत्ती 6:13 में यीशु की शिक्षा और लूका 22:32 में दिए गए उसके नमूने का अनुसरण करते हुए, दूसरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि वे परीक्षा में पड़ने से बचे रहें। और हमें परमेश्वर से यह विनती करते हुए उनके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उनके शरीर और मन दोनों की चोटोंके घावों को चंगा करे। याकूब 5:14-16 में याकूब के इन निर्देशों को सुने :

> यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें, और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ: धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। **(याकूब 5:14-16)**

याकूब ने सिखाया कि जब हम प्रभु के नाम में दूसरों का समर्थन करते हैं, अर्थात्, जब हम प्रभु को यह स्मरण दिलाने के द्वारा उनके लिए मध्यस्थता करते हैं कि वे मसीह से संबंध रखते हैं, तो प्रभु हमारे द्वारा उनके लिए किए गए समर्थन को कृपा के साथ ग्रहण करने की प्रवृत्ति रखता है, और हमारी विनतियों का उत्तर देता है। और इसी कारण, हमें उन लोगों का निरंतर समर्थन करने के द्वारा इस सौभाग्य का पूरा लाभ लेना चाहिए जो किसी आवश्यकता में हों।

> मुझे परमेश्वर की सर्वोच्चता में अटल भरोसा है। मुझे पूर्ण भरोसा है कि यीशु मसीह इस समय पिता के सिंहासन के समक्ष मेरे और सब विश्वासियों के लिए मध्यस्थता कर रहा है। मुझे पूर्ण भरोसा है कि मुझे जो कुछ भी चाहिए वह मसीह में है। इसलिए, क्या यह किसी को चोट पहुँचाएगा यदि मैं उनके लिए मध्यस्थता की प्रार्थना न करूँ जिनके विषय में मैं जानता हूँ कि वे किसी आवश्यकता में हैं? मैं आपको बता दूँ कि कोई ऐसा प्रश्न नहीं करता है जब वह आवश्यकता में होता है। मैं भी एक ऐसी परिस्थिति में रहा हूँ जब मुझे एक बहुत बड़ी आवश्यकता थी। मैं ऐसी परिस्थिति में रहा हूँ जहाँ चिकित्सीय रूप में मैं बिलकुल अंतिम अवस्था में था। मैं जानता था कि विश्वासियों की प्रार्थनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं जानता था कि मसीह में मेरे भाई और बहन मेरे लिए जब प्रार्थना कर रहे थे तो मेरे जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। मेरा परम विश्वास और भरोसा एक सर्वोच्च परमेश्वर पर है, परंतु मसीह के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता इस बात की मांग करती है कि हम वह करें जिसकी आज्ञा मसीह देता है, और उसका अर्थ है कि विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रार्थना करना। मैं एक कारण जानता हूँ कि यह महत्वपूर्ण है। मैं तब अधिक विश्वासयोग्य मसीही होता हूँ जब मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ जिनके विषय में मैं जानता हूँ कि वे आवश्यकता में हैं।
>
> — डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

और निःसंदेह हमें प्रतिदिन के जीवन के विषयों के लिए भी दूसरों का समर्थन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब हम स्वयं के लिए रोटी की प्रार्थना करते हैं, तो हमें दूसरों का भी समर्थन करना चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उनकी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करे। हमें उससे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपने लोगों को हर तरह की आशीषें दे, जैसे कि अच्छा स्वास्थ्य, रोजगार, और उनके संबंधों में सफलता। जब कभी हमारे अपने जीवनों की परिस्थितियाँ हमारे हृदयों को बोझिल करती हैं, तो हमें परमेश्वर से विनती करनी चाहिए कि वह हमारी सहायता करे। और इसी प्रकार, हमें दूसरों की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने हेतु प्रेरित होना चाहिए, फिर चाहे वे आवश्यकताएँ छोटी हों या बड़ी।

> लोग अक्सर प्रार्थना के रहस्य से अचंभित रहते हैं। हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? यदि परमेश्वर पहले से ही सब बातों को जानता है, और यदि यीशु पहले से ही हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है, तो हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता क्यों है? क्या कोई बात अभी भी रह गई है, या इससे किसी को चोट पहुँचती है यदि हम प्रार्थना नहीं करते और संसार के लिए और दूसरों के लिए मध्यस्थता नहीं करते? मैं सोचता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर है हाँ, किसी को चोट पहुँचाती है, और उसका कारण यहाँ हैं। सबसे पहले, यदि हम मध्यस्थता नहीं करते, तो हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर ने हमें प्रार्थना करने की आज्ञा दी है। एक स्तर पर, यही वह सब कुछ है जिसे हमें जानने की आवश्यकता है। हमें इस रहस्य को समझने की आवश्यकता नहीं है कि यह कैसे कार्य करता है। परमेश्वर ने हमें प्रार्थना करने की आज्ञा दी है। और यदि हम उस पर भरोसा रखते हैं और उससे प्रेम करते हैं, तो हम प्रार्थना करेंगे। परंतु दूसरी बात यह है कि परमेश्वर ने हमें न केवल प्रार्थना करने की आज्ञा दी है, बल्कि इन सब के रहस्य में वह यीशु की मध्यस्थता में संतों की प्रार्थना को भी सम्मिलित करता है। मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के इस चित्र पर आकर अटक जाता हूँ जहाँ पर वह धूप है जो जलती रहती है और परमेश्वर तक पहुँच जाती है जिनका वर्णन संतों की प्रार्थनाओं के रूप में किया गया है। यह मानो ऐसा है कि यदि हम प्रार्थना नहीं करते, तो हम परमेश्वर के साथ अपने संबंध को भी चोट पहुँचाते हैं जिसमें परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ उन बातों में सम्मिलित हों जो वह संसार में कर रहा है। इसलिए वह हमें अपने सहकर्मी के रूप में देखने के द्वारा हमें अपने साथ एक गहरे और पूर्ण संबंध में आने के लिए बुलाता है, जैसा कि पौलुस अपने और दूसरों के बारे में वर्णन करता है कि हम सब मध्यस्थता के द्वारा छुटकारे के इस कार्य में परमेश्वर के सहकर्मी हैं। इसलिए परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को चोट पहुँचती है। परंतु तीसरा, यह सब रहस्यों में सबसे बड़ा है। परमेश्वर ने यह निर्णय लिया है कि वह संसार को छुटकारा देगा परंतु इसके बाहर से कार्य करने के द्वारा नहीं, बल्कि इसके भीतर से ही अपने अनुग्रह के सामर्थ्य की रचना करने के द्वारा। और इसलिए जब हम यीशु के साथ मध्यस्थता करते हैं, तो ऐसा नहीं है कि हम यह सोचें कि हम परमेश्वर को ऐसा कार्य करने के लिए मनाने का प्रयास कर रहे हैं जो वह करना नहीं चाहता, या फिर यीशु की प्रार्थना में कुछ और भी जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हमें संसार के लिए या दूसरों के लिए अपनी मध्यस्थता को इस प्रकार देखना चाहिए। हम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा संसार को या दूसरों को लेकर उस स्थान पर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं जहाँ परमेश्वर चाहता है कि वे रहें, ताकि उसकी आशीष और उसका अनुग्रह उन पर उंडेला जा सके। और इसलिए,

> परमेश्वर की रहस्यपूर्ण रूपरेखा में तब कुछ घटी अवश्य होगी यदि हम प्रार्थना नहीं करते हैं, क्योंकि अपनी सृष्टि के भीतर से उसने अपनी छुटकारा पाई हुई संतान को केवल इसलिए छोड़ा है कि वे न केवल अंतिम उद्धार की बाट जोहें, बल्कि अब कार्य भी करें, संसार और दूसरों को प्रार्थना के द्वारा उस स्थान की ओर खींचें और आकर्षित करें, जहाँ परमेश्वर उन्हें उद्धार दे सकता है।
>
> — डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे

उपसंहार

यीशु याजक है, पर आधारित इस अध्याय में, हमने यीशु के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि को देखा है, जिसमें हमने देखा कि परमेश्वर ने इसलिए याजकों को नियुक्त किया कि वे परमेश्वर के लोगों को उसकी विशेष और पवित्र उपस्थिति में लाने के लिए तैयार करें और इसमें उनकी अगुवाई करें ताकि वे उसकी आशीष को प्राप्त कर सकें। हमने यह भी देखा कि यीशु ने हमारे महान महायाजक बनने के द्वारा किस प्रकार नए नियम में इस कार्यभार को पूरा किया है। और हमने कुछ ऐसे तरीकों पर ध्यान दिया जिनमें हम यीशु की याजकीय सेवकाई के सिद्धांतों को आधुनिक संसार में अपने जीवनों पर लागू कर सकें।

यीशु बाइबल के याजकीय कार्यभार की परम पूर्णता है। हमारे महान महायाजक होने के नाते, वह परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में रहने, और अद्‌भुत तरीके से परमेश्वर से आशीषित होने के लिए हमें तैयार कर रहा है। और वो आशीषें पूर्ण रूप से केवल भविष्य के लिए ही आरक्षित नहीं हैं। यीशु के बलिदान और उसकी मध्यस्थता के द्वारा पिता हमें अभी इसी वर्तमान संसार में हमारे अनंत जीवन का पूर्वाभास देना चाहता है। इसी कारणवश, मसीह के अनुयायियों को यीशु की याजकीय सेवकाई में आनंदित होना चाहिए और उस दिन की लालसा करनी चाहिए जब नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में स्वयं यीशु के द्वारा हमारा स्वागत किया जाएगा। हमें हमारे अपने महान महायाजक के रूप में मसीह की वर्तमान सेवकाई पर निर्भर रहना चाहिए और उससे लाभ प्राप्त करना चाहिए, जो अभी भी स्वर्गीय न्यायलय में हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है।